

SKPF-Wincompete Test Series 2026

पाठ्य सामग्री - PART I : खण्ड 2: भारत का इतिहास

Test 08 - आधुनिक भारत (स्वतंत्रता संघर्ष स्वतंत्रोत्तर आधुनिक भारत)

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न चरण उदारवादी एवं उग्रवादी चरण (1885-1917)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) की स्थापना 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय राजनैतिक चेतना की सबसे महत्वपूर्ण परिणति थी। इस कालखंड को मुख्य रूप से दो वैचारिक धाराओं में विभाजित किया जा सकता है:

1. कांग्रेस की स्थापना और ऐतिहासिक विवाद

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 28 दिसंबर 1885 को बॉम्बे के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में हुई। इसके संस्थापक एक सेवानिवृत्त ब्रिटिश अधिकारी ए.ओ. ह्यूम (A.O. Hume) थे।

सुरक्षा कपाट (Safety Valve) सिद्धांत बनाम तड़ित चालक सिद्धांत

- **सुरक्षा कपाट सिद्धांत:** लाला लाजपत राय ने अपनी पुस्तक 'यंग इंडिया' (1916) में यह तर्क दिया कि ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना वायसराय लॉर्ड डफरिन के निर्देश पर की थी। इसका उद्देश्य शिक्षित भारतीयों के बढ़ते असंतोष को एक 'वैधानिक मार्ग' देना था ताकि 1857 जैसा कोई अन्य हिंसक विद्रोह न हो।
- **तड़ित चालक (Lightning Conductor) सिद्धांत:** गोपाल कृष्ण गोखले ने इस मिथक का खंडन करते हुए कहा कि भारतीय नेताओं ने ह्यूम का उपयोग एक 'तड़ित चालक' के रूप में किया। यदि भारतीय स्वयं ऐसी संस्था बनाते, तो ब्रिटिश सरकार उसे जन्म लेते ही कुचल देती। एक अंग्रेज के नेतृत्व में होने के कारण कांग्रेस को प्रारंभिक सुरक्षा प्राप्त हुई।

2. उदारवादी चरण (1885-1905): 'नरम दल' की राजनीति

इस काल के नेताओं को 'उदारवादी' कहा जाता था क्योंकि उनकी कार्यप्रणाली संवैधानिक और क्रमिक सुधारों पर आधारित थी।

- **प्रमुख नेता:** दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, और दिनशा वाचा।
- **कार्यप्रणाली (3Ps):** प्रार्थना (Prayers), याचिका (Petitions), और विरोध (Protests)। वे ब्रिटिश न्यायप्रियता में अटूट विश्वास रखते थे।

नरमपंथियों की सबसे बड़ी उपलब्धि: आर्थिक आलोचना (Economic Critique)

उदारवादियों का सबसे महत्वपूर्ण योगदान ब्रिटिश शासन के आर्थिक शोषण का पर्दाफाश करना था।

- **धन का निष्कासन (Drain of Wealth):** दादाभाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक "Poverty and Un-British Rule in India" में सिद्ध किया कि भारत की गरीबी का मूल कारण भारत से धन का एकतरफा इंग्लैंड जाना है।
- **आर.सी. दत्त:** इन्होंने "Economic History of India" लिखकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विनाश का आधिकारिक विवरण दिया।

- **प्रभाव:** इस आर्थिक आलोचना ने यह साबित कर दिया कि ब्रिटिश शासन भारत के कल्याण के लिए नहीं, बल्कि दोहन के लिए है। इसने भविष्य के जन-आंदोलनों के लिए 'साझा आर्थिक शत्रु' की पहचान की।

3. उग्रवादी चरण (1905-1917): 'गरम दल' का उदय

20वीं सदी के प्रारंभ में कांग्रेस के भीतर एक नया वर्ग उभरा जो उदारवादियों की 'राजनैतिक भिक्षावृत्ति' से असंतुष्ट था।

- **प्रमुख नेता (लाल-बाल-पाल):** लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, और विपिन चंद्र पाल। इनके वैचारिक गुरु अरविंद घोष थे।
- **दर्शन:** स्वराज्य (Swaraj), स्वदेशी (Swadeshi), और बहिष्कार (Boycott)।

उग्रवाद के उदय के सामाजिक-धार्मिक और अंतरराष्ट्रीय कारण

1. **सामाजिक-धार्मिक पुनरुत्थान:** स्वामी दयानंद सरस्वती और विवेकानंद के विचारों ने भारतीयों में सांस्कृतिक आत्मविश्वास जगाया। तिलक ने 'गणपति उत्सव' (1893) और 'शिवाजी उत्सव' (1895) के माध्यम से धर्म को राष्ट्रवाद का आधार बनाया।
2. **अंतरराष्ट्रीय घटनाएँ:** 1905 में **जापान द्वारा रूस की पराजय** ने 'यूरोपीय अजेयता' के भ्रम को तोड़ दिया। इथियोपिया द्वारा इटली की हार ने भी एशियाई राष्ट्रों को प्रेरित किया।
3. **कर्जन की दमनकारी नीतियाँ:** बंगाल विभाजन (1905) ने उग्र राष्ट्रवाद को एक जन-आंदोलन में बदल दिया।

4. कांग्रेस के प्रमुख अधिवेशन और ऐतिहासिक महत्व

वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	विशेष महत्व
1885	बॉम्बे	डब्ल्यू. सी. बनर्जी	प्रथम अधिवेशन, 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
1886	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	इंडियन नेशनल कॉन्फ्रेंस का विलय।
1887	मद्रास	बदरुद्दीन तैयबजी	प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष।
1888	इलाहाबाद	जॉर्ज यूल	प्रथम अंग्रेज (यूरोपीय) अध्यक्ष।
1905	बनारस	गोपाल कृष्ण गोखले	बंगाल विभाजन का विरोध और स्वदेशी का समर्थन।

1906	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	'स्वराज्य' शब्द का प्रथम बार कांग्रेस मंच से प्रयोग।
1907	सूरत	रासबिहारी घोष	सूरत विभाजन: कांग्रेस नरम और गरम दल में विभाजित।
1916	लखनऊ	ए.सी. मजूमदार	लखनऊ समझौता: कांग्रेस के दोनों दलों का मिलन और मुस्लिम लीग से समझौता।

5. सूरत विभाजन (1907) और लखनऊ समझौता (1916)

- **सूरत विभाजन:** स्वदेशी आंदोलन के प्रसार के तरीके और अध्यक्ष पद को लेकर विवाद हुआ। नरमपंथी आंदोलन को केवल बंगाल तक सीमित रखना चाहते थे, जबकि गरमपंथी इसे अखिल भारतीय बनाना चाहते थे। परिणामस्वरूप गरमपंथियों को कांग्रेस से बाहर कर दिया गया।
- **लखनऊ समझौता:** एनी बेसेंट और तिलक के प्रयासों से 1916 में दोनों दल पुनः एक हुए। इसी अधिवेशन में 'कांग्रेस-लीग समझौता' हुआ, जिसमें कांग्रेस ने मुसलमानों के लिए 'पृथक निर्वाचक मंडल' की मांग को स्वीकार कर लिया (जो बाद में विवादास्पद रहा)।

6. विश्लेषण:

उदारवादी और उग्रवादी चरणों को एक-दूसरे का विरोधी मानने के बजाय 'पूरक' के रूप में देखा जाना चाहिए। उदारवादियों ने वह '**बौद्धिक और वैधानिक ढांचा**' तैयार किया जिस पर उग्रवादियों ने '**जन-आंदोलन**' की इमारत खड़ी की। नरमपंथियों ने ब्रिटिश शासन के 'नैतिक मुखौटे' को हटाया, जबकि गरमपंथियों ने भारतीयों को 'आत्म-बलिदान' और 'सामूहिक संघर्ष' के लिए तैयार किया।

wincompete

अध्याय 2: क्रांतिकारी आंदोलन के विभिन्न चरण (प्रथम एवं द्वितीय)

क्रांतिकारी आंदोलन भारतीय राष्ट्रवाद की वह धारा थी जिसने उदारवादियों की 'वैधानिक राजनीति' और उग्रवादियों की 'निष्क्रिय प्रतिरोध' की सीमाओं को तोड़कर प्रत्यक्ष संघर्ष का रास्ता चुना। इसे मुख्य रूप से दो चरणों में विभाजित किया जाता है।

1. प्रथम चरण (1907-1917): वैयक्तिक वीरता और गुप्त समितियां

प्रथम चरण का उदय मुख्य रूप से **बंगाल विभाजन (1905)** की विफलता और ब्रिटिश दमन के विरोध में हुआ।

महाराष्ट्र में उदय

- **चापेकर बंधु (1897):** दामोदर और बालकृष्ण चापेकर ने पूना के प्लेग कमिश्नर **रैंड (Rand)** की हत्या की। यह आधुनिक भारत में राजनैतिक हत्या का पहला मामला था।
- **अभिनव भारत (1904):** विनायक दामोदर सावरकर ने 'मित्र मेला' (1899) को 'अभिनव भारत' में परिवर्तित किया। यह मैजिनी के 'यंग इटली' की तर्ज पर एक गुप्त संगठन था।

बंगाल में क्रांतिकारी लहर

- **अनुशीलन समिति:** पी. मित्रा, वारिंद्र घोष और भूपेंद्रनाथ दत्त द्वारा स्थापित। इनका नारा था— "खून के बदले खून"।
- **अलीपुर षड्यंत्र केस (1908):** प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस ने मुजफ्फरपुर के जज किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास किया।

विदेशों में क्रांतिकारी गतिविधियां (UPSC/RPSC हेतु महत्वपूर्ण)

- **इंडिया हाउस (लंदन):** श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा स्थापित। मदनलाल ढींगरा ने यहीं से प्रेरित होकर **कर्जन वायली** की हत्या की।
- **गदर पार्टी (1913):** लाला हरदयाल ने सैन फ्रांसिस्को (अमेरिका) में इसकी स्थापना की। इनका उद्देश्य 1857 जैसी सैन्य क्रांति दोबारा करना था।
- **मैडम भीकाजी कामा:** इन्होंने 1907 में स्टटगार्ट (जर्मनी) में पहली बार भारतीय तिरंगा फहराया। इन्हें 'भारतीय क्रांति की माता' कहा जाता है।

2. द्वितीय चरण (1924-1934): समाजवाद की ओर झुकाव

असहयोग आंदोलन (1922) की अचानक समाप्ति के बाद युवाओं का मोहभंग हुआ, जिससे क्रांतिकारी आंदोलन का दूसरा और अधिक संगठित चरण शुरू हुआ।

HRA से HSRA तक का सफर

- **HRA (Hindustan Republican Association):** 1924 में कानपुर में शचींद्रनाथ साय्याल, रामप्रसाद बिस्मिल और योगेश चटर्जी द्वारा स्थापित।
 - **काकोरी ट्रेन एक्शन (1925):** सरकारी खजाना लूटने के आरोप में बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, रोशन सिंह और राजेंद्र लाहिड़ी को फांसी दी गई।
- **HSRA (Hindustan Socialist Republican Association):** सितंबर 1928 में दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में **चंद्रशेखर आजाद** के नेतृत्व में 'Socialist' शब्द जोड़ा गया।
 - **वैचारिक परिवर्तन:** भगत सिंह के प्रभाव में अब संगठन का लक्ष्य केवल अंग्रेजों को भगाना नहीं, बल्कि भारत में **समाजवादी गणतंत्र** की स्थापना करना था।

3. भगत सिंह और उनके साथी: एक नई चेतना

- **सांडर्स की हत्या (1928):** लाला लाजपत राय की लाठीचार्ज में हुई मृत्यु का बदला लेने के लिए भगत सिंह, राजगुरु और आजाद ने सांडर्स को गोली मारी।
- **असेंबली बम कांड (8 अप्रैल 1929):** 'पब्लिक सेफ्टी बिल' के विरोध में भगत सिंह और **बटुकेश्वर दत्त** ने खाली बेंचों पर बम फेंके। उद्देश्य किसी की हत्या करना नहीं, बल्कि "बहरों को सुनाना" था।
- **शहादत:** 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दी गई।

4. बंगाल में सूर्य सेन और चटगांव शस्त्रागार छापा (1930)

- **मास्टर दा (Surya Sen):** इन्होंने 'इंडियन रिपब्लिकन आर्मी' (IRA) की स्थापना की।
- **घटना:** 18 अप्रैल 1930 को सूर्य सेन के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने चटगांव के सरकारी शस्त्रागार पर कब्जा कर लिया और अस्थायी क्रांतिकारी सरकार की घोषणा की।
- **महिला भागीदारी:** इस आंदोलन में **प्रीतिलता वाडेदार** और **कल्पना दत्त** जैसी महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने इसे अद्वितीय बना दिया।

5. राजस्थान के क्रांतिकारी (विशेष तथ्य)

राजस्थान की वीर भूमि भी इस धारा से अछूती नहीं थी:

- **अर्जुन लाल सेठी:** जयपुर में 'वर्धमान विद्यालय' के माध्यम से क्रांतिकारियों को प्रशिक्षण दिया। इन्होंने कहा था— "अगर अर्जुन लाल नौकरी करेगा, तो अंग्रेजों को देश से बाहर कौन निकालेगा?"
- **केसरी सिंह बारहट:** इनका पूरा परिवार क्रांति में समर्पित था। इन्होंने महाराणा फतेह सिंह को 'चेतावनी रा चूंगट्या' लिखकर दिल्ली दरबार में जाने से रोका था।
- **जोरावर सिंह और प्रताप सिंह बारहट:** लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना (1912) में शामिल थे।

6. विश्लेषण: क्रांतिकारी आंदोलन की विरासत

क्रांतिकारियों को "आतंकवादी" कहना ऐतिहासिक रूप से गलत है; वे '**क्रांतिकारी राष्ट्रवादी**' थे। उनका उद्देश्य केवल हिंसा नहीं, बल्कि देश के युवाओं में सोई हुई राष्ट्रीयता को जगाना था। द्वितीय चरण में भगत सिंह ने '**इंकलाब जिंदाबाद**' के नारे के साथ राष्ट्रवाद को अंतरराष्ट्रीय समाजवाद से जोड़ा। यद्यपि ये आंदोलन सैन्य रूप से अंग्रेजों को नहीं उखाड़ सके, लेकिन इन्होंने ब्रिटिश शासन की 'नैतिक अजेयता' को समाप्त कर दिया और जन-आंदोलनों (गांधीवादी युग) के लिए एक निर्भीक वातावरण तैयार किया।

7. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Scan)

संगठन / घटना	वर्ष	प्रमुख व्यक्तित्व	मुख्य केंद्र
अभिनव भारत	1904	वी.डी. सावरकर	नासिक (महाराष्ट्र)
गदर पार्टी	1913	लाला हरदयाल	सैन फ्रांसिस्को (USA)
HSRA	1928	चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह	दिल्ली
चटगांव छापा	1930	सूर्य सेन (मास्टर दा)	बंगाल

काकोरी कांड	1925	रामप्रसाद बिस्मिल	लखनऊ के पास
-------------	------	-------------------	-------------

अध्याय 3: गांधीवादी युग (1917-1947): जन आंदोलनों का उदय

1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद महात्मा गांधी ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा, नई भाषा और नई ऊर्जा प्रदान की। गांधीवादी युग का मूल आधार 'सत्य' और 'अहिंसा' की शक्ति पर टिका था, जिसे उन्होंने 'सत्याग्रह' का नाम दिया।

1. प्रारंभिक प्रयोग: क्षेत्रीय आंदोलनों से राष्ट्रीय मंच तक

गांधीजी ने सीधे बड़े आंदोलनों में कूदने के बजाय पहले स्थानीय समस्याओं को समझा।

- **चंपारण सत्याग्रह (1917):** बिहार के चंपारण में **तिनकठिया प्रणाली** (भूमि के 3/20 भाग पर नील की खेती अनिवार्य) के विरुद्ध। यह भारत में गांधीजी का **प्रथम सविनय अवज्ञा** आंदोलन था। राजकुमार शुक्ल के निमंत्रण पर वे वहां गए।
- **अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918):** प्लेग बोनस को लेकर मिल मालिकों और मजदूरों के बीच विवाद। यहाँ गांधीजी ने भारत में अपनी **प्रथम भूख हड़ताल** की।
- **खेड़ा सत्याग्रह (1918):** फसल बर्बाद होने के बावजूद कर वसूली के विरुद्ध। इसे भारत का **प्रथम असहयोग** आंदोलन माना जाता है।

2. असहयोग आंदोलन (1920-1922): प्रथम अखिल भारतीय संघर्ष

रोलेट एक्ट (काला कानून) और जलियांवाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल 1919) ने गांधीजी को पूर्ण असहयोग की ओर धकेला।

- **खिलाफत का विलय:** गांधीजी ने हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए खिलाफत के मुद्दे को असहयोग से जोड़ा।
- **रणनीति:** सरकारी उपाधियों का त्याग, शिक्षण संस्थानों और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार। स्वदेशी (चरखा और खादी) को बढ़ावा देना।
- **समाप्ति:** 5 फरवरी 1922 को **चौरी-चौरा कांड** (गोरखपुर) में हुई हिंसा के कारण गांधीजी ने आंदोलन वापस ले लिया। उन्होंने कहा— "अहिंसा के बिना स्वतंत्रता का कोई मूल्य नहीं।"

3. सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-1934): कानून की अवज्ञा

साइमन कमीशन के विरोध और 'पूर्ण स्वराज्य' (1929 लाहौर अधिवेशन) की घोषणा के बाद यह आंदोलन शुरू हुआ।

- **दांडी मार्च (12 मार्च - 6 अप्रैल 1930):** साबरमती से दांडी तक 241 मील की पैदल यात्रा। नमक कानून तोड़ना ब्रिटिश सत्ता के एकाधिकार को चुनौती थी।
- **रणनीति:** कर न देना, वनों के कानूनों को तोड़ना और महिलाओं द्वारा शराब की दुकानों पर धरना देना।
- **गांधी-इरविन समझौता (1931):** आंदोलन को अस्थायी रूप से स्थगित कर द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने का निर्णय।
- **पुनः प्रारंभ:** सम्मेलन की विफलता के बाद 1932 में आंदोलन पुनः शुरू हुआ, लेकिन दमन के कारण 1934 में आधिकारिक रूप से समाप्त हो गया।

4. भारत छोड़ो आंदोलन (1942): अंतिम प्रहार

क्रिप्स मिशन की विफलता और द्वितीय विश्व युद्ध की परिस्थितियों के बीच 'अगस्त क्रांति' का जन्म हुआ।

- **नारा:** "करो या मरो" (Do or Die)।
- **विशेषता:** शीर्ष नेतृत्व की गिरफ्तारी के बाद यह आंदोलन स्वतः स्फूर्त हो गया। जयप्रकाश नारायण और अरुणा आसफ अली ने **भूमिगत आंदोलन** का नेतृत्व किया।
- **समानांतर सरकारें:** बलिया (चित्तू पांडे), सतारा और तामलुक में ब्रिटिश शासन के समानांतर भारतीय सरकारें बनीं।

5. गांधीवादी विचारधारा के मुख्य स्तंभ

1. **सत्याग्रह:** 'सत्य के लिए आग्रह'। यह कायरता नहीं, बल्कि आत्मिक बल का प्रदर्शन था।
2. **सर्वोदय:** समाज के अंतिम व्यक्ति का उत्थान।
3. **ट्रस्टीशिप (न्यासधारिता):** धनिकों को अपनी संपत्ति का स्वामी नहीं, बल्कि समाज का संरक्षक मानना चाहिए।
4. **साध्य और साधन की पवित्रता:** गांधीजी का मानना था कि गलत साधनों से सही लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता।
- 5.

6. विश्लेषण: संघर्ष-विराम-संघर्ष (S-T-S) की रणनीति

गांधीजी के आंदोलनों की सबसे बड़ी विशेषता 'निरंतरता' के बजाय 'ठहराव' थी। इतिहासकार बिपिन चंद्रा के अनुसार, गांधीजी जानते थे कि जन-सामान्य की संघर्ष करने की शक्ति असीमित नहीं होती। इसलिए वे एक तीव्र आंदोलन के बाद '**विराम**' (**Constructive Work**) का समय देते थे ताकि जनता अपनी ऊर्जा पुनः संचित कर सके। RPSC की दृष्टि से '**रचनात्मक कार्यों**' (अस्पृश्यता निवारण, खादी प्रचार) के महत्व को समझना अनिवार्य है, क्योंकि इन्हीं कार्यों ने आंदोलनों के बीच के समय में राष्ट्रवाद को जीवित रखा।

7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

आंदोलन	वर्ष	मुख्य कारण / घटना	उपलब्धि
असहयोग	1920-22	जलियांवाला बाग / खिलाफत	प्रथम जन-आंदोलन, राष्ट्रीय एकता।
सविनय अवज्ञा	1930-34	नमक कर / पूर्ण स्वराज्य	ब्रिटिश वैधानिक सत्ता को चुनौती।
भारत छोड़ो	1942	क्रिप्स मिशन की विफलता	'पूर्ण स्वतंत्रता' के प्रति अंतिम प्रतिबद्धता।

पूना समझौता	1932	सांप्रदायिक पंचाट (McDonald Award)	दलित वर्गों हेतु आरक्षित सीटों पर सहमति।
-------------	------	------------------------------------	--

अध्याय 4: राष्ट्रीय आंदोलन की अन्य धाराएं (वामपंथ, किसान एवं जनजातीय आंदोलन)

भारतीय स्वाधीनता संग्राम केवल एक राजनैतिक संघर्ष नहीं था, बल्कि यह औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध समाज के हर शोषित वर्ग की सामूहिक अभिव्यक्ति थी। 1920 के दशक के बाद राष्ट्रीय आंदोलन में वामपंथ, किसानों और आदिवासियों की सक्रियता ने कांग्रेस के एजेंडे को अधिक प्रगतिशील और समावेशी बनाया।

1. वामपंथी विचारधारा का उदय और विकास

1917 की **रूसी क्रांति** की सफलता ने भारतीय बुद्धिजीवियों और युवाओं को गहराई से प्रभावित किया।

- **भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI):** एम.एन. रॉय (M.N. Roy) ने **1920 में ताशकंद** में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की। भारत में इसका औपचारिक गठन 1925 में कानपुर में हुआ।
- **कांग्रेस समाजवादी पार्टी (CSP):** 1934 में कांग्रेस के भीतर ही **जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेंद्र देव और अच्युत पटवर्धन** ने समाजवादी विचारधारा को मजबूती देने हेतु 'CSP' का गठन किया।
- **नेहरू और बोस का प्रभाव:** जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस के मंच से समाजवाद का प्रचार किया, जिसके कारण 1936 के लखनऊ और 1937 के फैजपुर अधिवेशन में कांग्रेस ने 'आर्थिक और कृषि संबंधी क्रांतिकारी प्रस्ताव पारित किए।

2. किसान आंदोलन: खेतों से स्वराज की ओर

ब्रिटिश भू-राजस्व व्यवस्था (स्थायी, रैयतवाड़ी, महालवाड़ी) और जमींदारों के दमन ने किसानों को विद्रोह के लिए मजबूर किया।

- **अखिल भारतीय किसान सभा (AIKS):** 1936 के लखनऊ अधिवेशन में **स्वामी सहजानंद सरस्वती** (अध्यक्ष) और एन.जी. रंगा (सचिव) के नेतृत्व में इसका गठन हुआ। यह किसानों का पहला अखिल भारतीय संगठन था।
- **प्रमुख क्षेत्रीय आंदोलन:**
 - **एका आंदोलन (अवध):** मदारी पासी के नेतृत्व में लगान वृद्धि के विरुद्ध।
 - **बारदोली सत्याग्रह (1928):** वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में। इसी आंदोलन की सफलता के बाद वहां की महिलाओं ने उन्हें '**सरदार**' की उपाधि दी।
 - **तेभागा आंदोलन (बंगाल):** बटाईदार किसानों द्वारा फसल का दो-तिहाई हिस्सा मांग हेतु।

3. जनजातीय विद्रोह और राष्ट्रीय चेतना

आदिवासी विद्रोहों का मुख्य कारण जल, जंगल और जमीन पर उनके पारंपरिक अधिकारों का छीना जाना और 'दीकुओं' (बाहरी लोगों) का हस्तक्षेप था।

- **संताल विद्रोह (1855-56):** सिद्धू और कान्हू के नेतृत्व में। इसे 1857 से पूर्व का सबसे बड़ा सशस्त्र जनजातीय विद्रोह माना जाता है।
- **मुंडा विद्रोह (1899-1900):** बिरसा मुंडा के नेतृत्व में, जिसे 'उलगुलान' (महान हलचल) कहा जाता है। उन्होंने स्वयं को भगवान का दूत घोषित किया।
- **रम्पा विद्रोह (1922-24):** अल्लूरी सीताराम राजू के नेतृत्व में आंध्र प्रदेश में। यह गांधीजी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित था।

4. राजस्थान में किसान एवं जनजातीय आंदोलन (विशेष)

राजस्थान की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए यह खंड अत्यंत महत्वपूर्ण है:

- **बिजोलिया किसान आंदोलन (1897-1941):** भारत का सबसे लंबा चलने वाला 'पूर्णतः अहिंसक' आंदोलन। नेतृत्व: साधु सीताराम दास और बाद में **विजय सिंह पथिक**।
- **बेगूँ किसान आंदोलन:** विजय सिंह पथिक की प्रेरणा से रामनारायण चौधरी के नेतृत्व में।
- **भगत आंदोलन: गोविंद गिरी** ने भीलों में सामाजिक सुधार और चेतना हेतु 'सम्प सभा' (1883) की स्थापना की। 1913 का मानगढ़ धाम हत्याकांड राजस्थान का 'जलियांवाला बाग' कहलाता है।
- **एकी आंदोलन (मूमठ भील आंदोलन): मोतीलाल तेजावत** के नेतृत्व में, जिन्होंने किसानों और आदिवासियों की '21 सूत्री मांग पत्र' (मेवाड़ की पुकार) प्रस्तुत की।

5. विश्लेषण: 'वर्ग' और 'राष्ट्र' का समन्वय

1930 के दशक तक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एक 'संयुक्त मोर्चा' बन चुका था। वामपंथियों ने कांग्रेस को 'पूर्ण स्वराज्य' की ओर धकेला, तो किसान आंदोलनों ने कांग्रेस को गाँवों तक पहुँचाया। यद्यपि कांग्रेस का नेतृत्व मुख्य रूप से मध्यम वर्ग के हाथों में था, लेकिन इन अन्य धाराओं के दबाव के कारण ही 1931 के **कराची अधिवेशन** में 'मौलिक अधिकारों और आर्थिक नीति' का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित हुआ। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से **अखिल भारतीय किसान सभा (1936)** और **विजय सिंह पथिक के योगदान** का कालक्रमानुसार अध्ययन अपरिहार्य है।

6. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

आंदोलन / संगठन	वर्ष	नेतृत्व	मुख्य विशेषता
कम्युनिस्ट पार्टी (CPI)	1925	एम.एन. राँय / सत्य भक्त	मजदूर वर्ग की चेतना।
अखिल भारतीय किसान सभा	1936	स्वामी सहजानंद सरस्वती	प्रथम अखिल भारतीय किसान मंच।
बारदोली सत्याग्रह	1928	सरदार वल्लभभाई पटेल	'सरदार' की उपाधि प्राप्त हुई।
मानगढ़ हत्याकांड	1913	गोविंद गिरी (भगत आंदोलन)	राजस्थान का जलियांवाला बाग।
एकी आंदोलन	1921	मोतीलाल तेजावत	'मेवाड़ की पुकार' (21 मांगें)।

अध्याय 5: स्वतंत्रता का अंतिम चरण और विभाजन की त्रासदी (1942-1947)

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति और भारत छोड़ो आंदोलन की तीव्रता ने ब्रिटिश साम्राज्य को यह अहसास करा दिया था कि अब भारत पर शासन करना असंभव है। 1942 से 1947 के बीच की घटनाएँ सैन्य विद्रोह, वैधानिक प्रस्तावों और सांप्रदायिक तनावों का एक जटिल मिश्रण थीं।

1. आई.एन.ए. (INA) और सुभाष चंद्र बोस: सैन्य चुनौती

जहाँ गांधीजी अहिंसक संघर्ष का नेतृत्व कर रहे थे, वहीं सुभाष चंद्र बोस ने विदेशों से सैन्य सहायता प्राप्त कर भारत को मुक्त कराने की योजना बनाई।

- **आजाद हिंद फौज का गठन:** इसकी मूल स्थापना **कैप्टन मोहन सिंह** ने की थी, लेकिन 1943 में सिंगापुर पहुँचने पर **सुभाष चंद्र बोस** ने इसका नेतृत्व संभाला।
- **आजाद हिंद सरकार:** बोस ने 21 अक्टूबर 1943 को सिंगापुर में 'आरजी हुकुमत-ए-आजाद हिंद' (अस्थायी सरकार) की स्थापना की।
- **लाल किला मुकदमा (1945):** युद्ध के बाद INA के अधिकारियों (सहगल, दिल्ली, शाहनवाज) पर राजद्रोह का मुकदमा चला।
 - **महत्व:** इस मुकदमे ने ब्रिटिश भारतीय सेना के भीतर वफादारी के संकट को जन्म दिया और रॉयल इंडियन नेवी (RIN) विद्रोह (1946) का आधार बना।

2. वैधानिक वार्ताओं का दौर: वेवेल से कैबिनेट मिशन तक

युद्ध के बाद सत्ता हस्तांतरण की प्रक्रिया को गति देने हेतु कई प्रयास किए गए।

- **वेवेल योजना एवं शिमला सम्मेलन (1945):** वायसराय की परिषद के पुनर्गठन का प्रयास, जो मुस्लिम लीग और कांग्रेस के बीच 'वीटो' अधिकार को लेकर विफल रहा।
- **कैबिनेट मिशन (1946):** पैथिक लॉरेंस, स्टेफोर्ड क्रिप्स और ए.वी. अलेक्जेंडर।
 - **मुख्य प्रस्ताव:** भारत की एकता बनाए रखना (पाकिस्तान की मांग खारिज), प्रांतों का तीन समूहों (A, B, C) में विभाजन और एक संघीय ढांचा।
 - **परिणाम:** कांग्रेस और लीग दोनों ने इसे आंशिक रूप से स्वीकारा, लेकिन व्याख्याओं में मतभेद के कारण अंततः 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' (16 अगस्त 1946) की त्रासदी हुई।

3. माउंटबेटन योजना: विभाजन का खाका (3 जून 1947)

लॉर्ड माउंटबेटन को भारत के अंतिम वायसराय के रूप में 'सत्ता हस्तांतरण' और 'विभाजन' की जिम्मेदारी सौंपी गई।

- **योजना के मुख्य बिंदु:**
 1. भारत और पाकिस्तान के रूप में दो डोमिनियन (अधिराज्य) बनेंगे।
 2. पंजाब और बंगाल का विभाजन वहाँ की विधानसभाओं के मत पर आधारित होगा।
 3. रियासतों को भारत या पाकिस्तान में शामिल होने अथवा स्वतंत्र रहने (वैधानिक रूप से) की छूट होगी।
 4. **रेडक्लिफ आयोग:** सीमाओं के निर्धारण हेतु **सिरिल रेडक्लिफ** की अध्यक्षता में दो सीमा आयोग गठित किए गए।

4. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947: वैधानिक विश्लेषण

ब्रिटिश संसद द्वारा 18 जुलाई 1947 को पारित यह अधिनियम भारत के औपनिवेशिक इतिहास का अंतिम वैधानिक दस्तावेज था।

- **अधिराज्य की संप्रभुता:** दोनों डोमिनियन (भारत और पाकिस्तान) की संविधान सभाओं को अपने देशों के लिए संविधान बनाने और ब्रिटिश संसद के किसी भी कानून को निरस्त करने की पूर्ण शक्ति दी गई।

- **ब्रिटिश सम्राट की भूमिका:** 'भारत के सम्राट' (Emperor of India) की पदवी समाप्त कर दी गई।
- **परम सत्ता का अंत (Lapse of Paramountcy):** देशी रियासतों पर ब्रिटिश ताज की सर्वोच्चता समाप्त कर दी गई, जिससे वे तकनीकी रूप से स्वतंत्र हो गईं (बाद में पटेल ने इनका एकीकरण किया)।
- **शासन संचालन:** नया संविधान लागू होने तक 1935 के भारत शासन अधिनियम को ही आधार माना गया।

5. विभाजन की त्रासदी और मानवीय संकट

स्वतंत्रता का उल्लास विभाजन की विभीषिका के साथ आया।

- **विस्थापन:** इतिहास का सबसे बड़ा मानव प्रवास (लगभग 1.5 करोड़ लोग)।
- **सांप्रदायिक दंगे:** पंजाब और बंगाल में अभूतपूर्व हिंसा, जिसे गांधीजी ने 'नोआखली' में शांति स्थापित कर थामने का प्रयास किया।

6. विश्लेषण: अपरिहार्य विभाजन?

क्या 1947 में विभाजन को रोका जा सकता था? इतिहासकारों के बीच यह बहस का विषय है। कैबिनेट मिशन की विफलता के बाद 'अखंड भारत' का सपना धुंधला गया। माउंटबेटन की 'त्वरित विदाई' की नीति ने प्रशासनिक ढांचे को चरमरा दिया, जिससे सीमाओं पर हिंसा बेकाबू हुई। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से 'एटली की घोषणा' (20 फरवरी 1947) और कैबिनेट मिशन के सदस्यों के नाम को याद रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह विभाजन केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि प्रशासनिक, सैन्य और भावनात्मक बंटवारा था।

7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

घटना / अधिनियम	तिथि / वर्ष	मुख्य व्यक्तित्व	परिणाम
राजगोपालाचारी सूत्र	1944	सी. राजगोपालाचारी	कांग्रेस-लीग समझौते का प्रथम प्रयास।
कैबिनेट मिशन	मार्च 1946	क्रिप्स, लॉरेंस, अलेक्जेंडर	संविधान सभा का गठन।
अंतरिम सरकार	2 सितंबर 1946	जे.एल. नेहरू	प्रथम राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद।
3 जून योजना	1947	लॉर्ड माउंटबेटन	भारत का विभाजन स्वीकृत।
स्वतंत्रता अधिनियम	18 जुलाई 1947	ब्रिटिश संसद	भारत और पाकिस्तान का वैधानिक जन्म।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के महत्वपूर्ण योगदानकर्ता

अध्याय 6 : महात्मा गांधी: विचारधारा और वैश्विक योगदान

महात्मा गांधी के लिए 'स्वराज' केवल ब्रिटिश शासन की विदाई नहीं था, बल्कि यह एक 'आत्म-शासित' समाज का निर्माण था। उनकी विचारधारा राजनीतिक मुक्ति के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक न्याय के सिद्धांतों पर टिकी थी।

1. सामाजिक विचार और अस्पृश्यता निवारण (हरिजन अभियान)

गांधीजी का मानना था कि अस्पृश्यता हिंदू धर्म पर एक कलंक है और इसके निवारण के बिना स्वराज्य असंभव है।

- **पुणे समझौता (1932) और पृष्ठभूमि:** सांप्रदायिक पंचाट (Communal Award) के विरुद्ध यरवदा जेल में गांधीजी के उपवास के बाद अंबेडकर के साथ यह ऐतिहासिक समझौता हुआ।
- **हरिजन सेवक संघ:** सितंबर 1932 में गांधीजी ने 'अस्पृश्यता निवारण संघ' की स्थापना की, जिसका नाम बाद में 'हरिजन सेवक संघ' रखा गया। इसके प्रथम अध्यक्ष **घनश्यामदास बिड़ला** थे।
- **हरिजन यात्रा (1933-34):** उन्होंने लगभग 20,000 मील की पदयात्रा की ताकि छुआछूत के विरुद्ध जनचेतना जगाई जा सके। उन्होंने निचली जातियों को 'हरिजन' (ईश्वर की संतान) नाम दिया।
- **आत्म-शुद्धि:** उन्होंने सर्व हिंदुओं से आह्वान किया कि वे अपने पापों का प्रायश्चित्त करें और दलितों को मंदिर प्रवेश व सार्वजनिक कुओं के उपयोग का अधिकार दें।

2. आर्थिक विचार: न्यासधारिता (Trusteeship) का सिद्धांत

गांधीजी ने पूँजीवाद और साम्यवाद दोनों के विकल्प के रूप में 'ट्रस्टीशिप' का दर्शन प्रस्तुत किया।

- **सिद्धांत का सार:** धनी व्यक्तियों को अपनी संपत्ति का 'स्वामी' नहीं, बल्कि समाज का 'संरक्षक' (Trustee) समझना चाहिए। उन्हें अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं से अधिक धन का उपयोग समाज के कल्याण हेतु करना चाहिए।
- **वर्ग-समन्वय:** वे 'वर्ग-संघर्ष' (मार्क्सवाद) के बजाय 'वर्ग-सहयोग' में विश्वास करते थे। उनका मानना था कि हृदय परिवर्तन के माध्यम से आर्थिक असमानता दूर की जा सकती है।
- **विकेंद्रीकरण और स्वदेशी:** उन्होंने बड़े उद्योगों के स्थान पर **कुटीर उद्योगों (खादी)** पर बल दिया ताकि गाँवों को आत्मनिर्भर बनाया जा सके। उनका प्रसिद्ध नारा था— "उत्पादन जनता के लिए हो, न कि मास-प्रोडक्शन (Mass Production) मुनाफे के लिए।"

3. नई तालीम (Wardha Scheme of Education, 1937)

शिक्षा के क्षेत्र में गांधीजी का दृष्टिकोण 'हाथ, हृदय और मस्तिष्क' के समन्वय पर आधारित था।

- **आधारभूत शिक्षा:** 1937 में वर्धा सम्मेलन में उन्होंने इस योजना को प्रस्तुत किया। डॉ. जाकिर हुसैन समिति ने इसका विस्तृत ब्यौरा तैयार किया।
- **मुख्य प्रावधान:**
 - 7 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए **निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा**।
 - शिक्षा का माध्यम **मातृभाषा** हो।
 - शिक्षा किसी उत्पादक **हस्तशिल्प (Craft)** के माध्यम से दी जाए ताकि छात्र आत्मनिर्भर बन सकें।
- **लक्ष्य:** चरित्र निर्माण और शारीरिक श्रम के प्रति सम्मान पैदा करना।

4. गांधीजी का वैश्विक प्रभाव

गांधीजी के अहिंसक प्रतिरोध (सत्य और अहिंसा) ने विश्व के कई महान नेताओं और आंदोलनों को प्रेरित किया।

- **मार्टिन लूथर किंग जूनियर (USA):** अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन (Civil Rights Movement) के दौरान उन्होंने गांधीवादी सत्याग्रह को अपना मुख्य हथियार बनाया।

- **नेल्सन मंडेला (दक्षिण अफ्रीका):** 'रंगभेद' (Apartheid) के विरुद्ध संघर्ष में उन्होंने गांधीजी को अपना प्रेरणा स्रोत माना।
- **वैश्विक शांति:** उनके विचारों ने अल्बर्ट आइंस्टीन, रोमन रोलेंड और बर्नार्ड शॉ जैसे चिंतकों को प्रभावित किया। वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा उनके जन्मदिवस (2 अक्टूबर) को '**अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस**' के रूप में मनाया जाता है।

5. विश्लेषण: गांधी बनाम अंबेडकर दृष्टिकोण

RPSC मुख्य परीक्षा की दृष्टि से यह समझना आवश्यक है कि जहाँ डॉ. अंबेडकर दलित उत्थान के लिए '**कानूनी और संवैधानिक**' अधिकारों पर बल देते थे, वहीं गांधीजी '**सामाजिक और नैतिक**' हृदय परिवर्तन को प्राथमिकता देते थे। गांधीजी का मानना था कि यदि हिंदू समाज स्वेच्छा से छुआछूत नहीं छोड़ता, तो कानून प्रभावी नहीं होगा। ट्रस्टीशिप का सिद्धांत भले ही व्यवहार में कठिन लगा हो, लेकिन इसने 'सामाजिक उत्तरदायित्व' (CSR) की आधुनिक अवधारणा की नींव रखी।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (विशेष)

- **तथ्य:** गांधीजी ने 'हरिजन' पत्रिका का प्रकाशन 1933 में प्रारंभ किया।
- **तथ्य:** गांधीजी के अनुसार, "**अहिंसा बहादुरों का शस्त्र है, कायरों का नहीं।**"
- **तथ्य:** राजस्थान में गांधीजी के 'पाँचवें पुत्र' के रूप में **जमनालाल बजाज** को जाना जाता है, जिन्होंने चरखा संघ और हरिजन सेवा में बड़ी भूमिका निभाई।
- **विरोधाभास:** कई समाजवादी आलोचकों ने ट्रस्टीशिप को 'पूँजीपतियों को बचाने वाला सिद्धांत' कहा, लेकिन गांधीजी के लिए यह अहिंसक क्रांति का मार्ग था।

7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

संकल्पना	मुख्य तत्व	महत्व
हरिजन अभियान	आत्म-शुद्धि, मंदिर प्रवेश	सामाजिक समानता।
ट्रस्टीशिप	संरक्षक का विचार, विकेंद्रीकरण	वैकल्पिक आर्थिक मॉडल।
नई तालीम	हस्तशिल्प आधारित शिक्षा	आत्मनिर्भरता।
अहिंसा	आत्मिक बल, प्रेम	वैश्विक संघर्ष का उपकरण।

अध्याय 7: सरदार वल्लभभाई पटेल: रियासतों का एकीकरण और लौह पुरुष

15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश भारत की स्वतंत्रता के समय देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती 562 से अधिक देशी रियासतों का भविष्य था। 'लौह पुरुष' सरदार पटेल ने अदम्य साहस और कूटनीतिक दूरदर्शिता से भारत को 'भू-राजनैतिक विखंडन' से बचाकर एक सूत्र में पिरोया।

1. रियासती विभाग और वी.पी. मेनन की भूमिका

5 जुलाई 1947 को रियासती विभाग (States Department) का गठन किया गया, जिसका कार्यभार सरदार पटेल को सौंपा गया।

- **वी.पी. मेनन (V.P. Menon):** पटेल ने अनुभवी सिविल सेवक वी.पी. मेनन को अपना सचिव नियुक्त किया। मेनन ने रियासतों के विलय हेतु वैधानिक दस्तावेजों का मसौदा तैयार करने और राजाओं के साथ बातचीत में 'पटेल के दाहिने हाथ' के रूप में कार्य किया।
- **रणनीति:** पटेल ने 'गाजर और छड़ी' (Carrot and Stick) की नीति अपनाई। उन्होंने राजाओं को देशभक्ति का आह्वान किया और 'प्रिवी पर्स' (Privy Purse) व विशेषाधिकारों का प्रलोभन दिया, साथ ही विलय न करने पर जनता के विद्रोह और सैन्य कार्यवाही की चेतावनी भी दी।

2. एकीकरण की कूटनीति: तीन चुनौतीपूर्ण रियासतें

अधिकांश रियासतों ने 15 अगस्त 1947 तक 'विलेय पत्र' (Instrument of Accession) पर हस्ताक्षर कर दिए थे, लेकिन तीन रियासतों ने भारत की एकता के लिए संकट उत्पन्न किया:

A. जूनागढ़ (Junagadh): जनमत संग्रह की जीत

- **विवाद:** यहाँ का नवाब **महाबत खान** पाकिस्तान में शामिल होना चाहता था, जबकि अधिकांश जनता हिंदू थी और भारत में विलय चाहती थी।
- **कार्यवाही:** पटेल ने जूनागढ़ की घेराबंदी की और नवाब के कराची भाग जाने के बाद फरवरी 1948 में **जनमत संग्रह (Plebiscite)** कराया।
- **परिणाम:** 99% से अधिक जनता ने भारत के पक्ष में मतदान किया।

B. हैदराबाद (Hyderabad): ऑपरेशन पोलो (Operation Polo)

- **विवाद:** निज़ाम **उस्मान अली खान** स्वतंत्र रहना चाहता था। उसने 'रजाकारों' (कट्टरपंथी सेना) के माध्यम से जनता पर अत्याचार शुरू किए।
- **सैन्य कार्यवाही:** सरदार पटेल ने इसे "भारत के पेट में कैंसर" कहा। 13 से 18 सितंबर 1948 के बीच '**ऑपरेशन पोलो**' (पुलिस कार्यवाही) चलाई गई।
- **परिणाम:** निज़ाम ने आत्मसमर्पण किया और हैदराबाद भारत का अभिन्न अंग बना।

C. कश्मीर (Kashmir): विलेय पत्र और कबायली आक्रमण

- **विवाद:** राजा **हरि सिंह** ने तटस्थ रहने का निर्णय लिया था।
- **घटना:** अक्टूबर 1947 में पाकिस्तान समर्थित कबायलियों ने हमला किया। संकट में हरि सिंह ने भारत से मदद मांगी।
- **विलय:** 26 अक्टूबर 1947 को हरि सिंह ने '**विलेय पत्र**' पर हस्ताक्षर किए। भारतीय सेना ने कबायलियों को खदेड़ा, लेकिन मामला संयुक्त राष्ट्र (UN) में जाने के कारण यह आज भी विवादित रहा।

3. प्रिवी पर्स (Privy Purse) का सिद्धांत

सरदार पटेल ने राजाओं को उनकी रियासतों के समर्पण के बदले एक निश्चित वार्षिक धनराशि देने का वादा किया, जिसे 'प्रिवी पर्स' कहा गया।

- **उद्देश्य:** बिना रक्तपात के रियासतों का शांतिपूर्ण विलय सुनिश्चित करना।
- **वैधानिक स्थिति:** इसे भारतीय संविधान के मूल ढांचे में जगह दी गई (जिसे बाद में 1971 में इंदिरा गांधी सरकार द्वारा समाप्त कर दिया गया)।

4. विश्लेषण: 'लौह पुरुष' और 'बिस्मार्क' की तुलना

सरदार पटेल को 'भारत का बिस्मार्क' कहा जाता है क्योंकि जिस प्रकार बिस्मार्क ने जर्मनी का एकीकरण किया, पटेल ने उससे भी कठिन परिस्थितियों में भारत को अखंड बनाया। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है कि पटेल ने **राजस्थान के एकीकरण** में भी सक्रिय भूमिका निभाई (विशेषकर सिरोंही के विलय को लेकर विवाद)। उनकी सफलता का राज यह था कि वे राजाओं के मनोविज्ञान को समझते थे और राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर कभी समझौता नहीं करते थे।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (विशेष)

- **तथ्य:** सरदार पटेल भारत के प्रथम **उप-प्रधानमंत्री** और **गृह मंत्री** थे।
- **तथ्य:** 'रियासती सचिवालय' का गठन **5 जुलाई 1947** को हुआ था (तारीख अक्सर पूछी जाती है)।
- **तथ्य:** स्टेचू ऑफ यूनिटी (Statue of Unity) उनकी इसी एकीकरण की उपलब्धि का वैश्विक प्रतीक है।
- **नोट:** पटेल ने अखिल भारतीय सेवाओं (IAS/IPS) को भारत की एकता बनाए रखने के लिए "स्टील फ्रेम" (Steel Frame) कहा था।

6. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

रियासत	शासक	विलय का आधार	प्रमुख वर्ष / तिथि
जूनागढ़	महाबत खान	जनमत संग्रह	फरवरी 1948
हैदराबाद	निज़ाम उस्मान अली	ऑपरेशन पोलो	सितंबर 1948
कश्मीर	राजा हरि सिंह	विलेय पत्र (AoA)	26 अक्टूबर 1947
जोधपुर	हनवंत सिंह	पटेल की कूटनीति	अगस्त 1947

अध्याय 8: नेताजी सुभाष चंद्र बोस और क्रांतिकारी राष्ट्रवाद

सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वाधीनता संग्राम के वे सेनानी थे जिन्होंने कूटनीति और सैन्य शक्ति के समन्वय से ब्रिटिश साम्राज्य को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चुनौती दी। उनका दृष्टिकोण "पूर्ण स्वराज्य" के प्रति अडिग और समझौताहीन था।

1. कांग्रेस से जुड़ाव एवं वैचारिक मतभेद

सुभाष चंद्र बोस 1920 के दशक में कांग्रेस के युवा तुर्क नेताओं के रूप में उभरे। वे जवाहरलाल नेहरू के साथ मिलकर 'पूर्ण स्वराज्य' की मांग के मुखर पक्षधर थे।

- **हरिपुरा अधिवेशन (1938):** सुभाष चंद्र बोस निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए। इसी अधिवेशन में उन्होंने 'राष्ट्रीय योजना समिति' (National Planning Committee) का गठन किया।
- **त्रिपुरी संकट (1939):** बोस ने गांधीजी द्वारा समर्थित उम्मीदवार **पट्टाभि सीतारमैया** को हराकर दोबारा अध्यक्ष पद जीता।
 - **विवाद:** गांधीजी ने सीतारमैया की हार को "अपनी हार" बताया। गांधीजी और कांग्रेस कार्यकारिणी के साथ बढ़ते वैचारिक मतभेदों के कारण बोस ने अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया।
 - **तथ्य:** उनके इस्तीफे के बाद **डॉ. राजेंद्र प्रसाद** को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया।

2. फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना (1939)

कांग्रेस छोड़ने के बाद, सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस के भीतर ही **3 मई 1939** को '**फॉरवर्ड ब्लॉक**' नामक एक नए वामपंथी गुट की स्थापना की।

- **उद्देश्य:** सभी साम्राज्य-विरोधी शक्तियों को एक मंच पर लाना और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध तीव्र संघर्ष छेड़ना।
- बाद में, ब्रिटिश सरकार ने उन्हें नजरबंद कर दिया, जहाँ से वे जनवरी 1941 में वेश बदलकर भाग निकले (The Great Escape)।

3. आजाद हिंद फौज (INA) का पुनर्गठन

आजाद हिंद फौज की नींव **कैप्टन मोहन सिंह** और **रासबिहारी बोस** ने रखी थी, लेकिन इसे एक अजेय सैन्य शक्ति में बदलने का श्रेय नेताजी को जाता है।

- **सिंगापुर आगमन (1943):** रासबिहारी बोस ने INA की कमान सुभाष चंद्र बोस को सौंपी।
- **अस्थायी सरकार (Arzi Hukumat-e-Azad Hind):** 21 अक्टूबर 1943 को सिंगापुर में नेताजी ने 'स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार' की घोषणा की।
- **सैन्य ब्रिगेड:** उन्होंने सेना को विभिन्न ब्रिगेडों में विभाजित किया— गांधी ब्रिगेड, नेहरू ब्रिगेड और आजाद ब्रिगेड।
- **रानी झाँसी रेजिमेंट:** यह विश्व की पहली महिला लड़ाकू रेजिमेंटों में से एक थी, जिसका नेतृत्व **कैप्टन लक्ष्मी सहगल** ने किया।

4. "दिल्ली चलो" और ऐतिहासिक नारे

आजाद हिंद फौज के माध्यम से नेताजी ने भारतीयों में मनोवैज्ञानिक क्रांति का सूत्रपात किया।

- **दिल्ली चलो:** बर्मा (म्यांमार) की सीमाओं से सैनिकों को भारत की ओर कूच करने का आह्वान।
- **जय हिंद:** यह नारा आजाद हिंद फौज का आधिकारिक अभिवादन बना, जो आज भी भारतीय सेना का हिस्सा है।

- **कोहिमा और इम्फाल:** 1944 में INA ने जापानी सेना के सहयोग से भारत की सीमा में प्रवेश किया और पहली बार भारतीय भूमि पर तिरंगा फहराया।

5. विश्लेषण: अहिंसा बनाम सैन्य शक्ति

सुभाष चंद्र बोस गांधीजी का अत्यंत सम्मान करते थे (उन्होंने ही गांधीजी को पहली बार 'राष्ट्रपिता' कहा था), लेकिन उनका मानना था कि अहिंसा से केवल नैतिक दबाव बनाया जा सकता है, सत्ता नहीं छीनी जा सकती। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से **त्रिपुरी अधिवेशन** के बाद के घटनाक्रम और **INA के रेजिमेंटों के नाम** महत्वपूर्ण हैं। नेताजी की रणनीति 'शत्रु का शत्रु मित्र होता है' पर आधारित थी, जिसके कारण उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान धुरी राष्ट्रों (जर्मनी, जापान) से सहयोग मांगा।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (विशेष)

- **तथ्य:** नेताजी ने अंडमान और निकोबार द्वीपों का नाम क्रमशः 'शहीद द्वीप' और 'स्वराज द्वीप' रखा था।
- **तथ्य:** उनके राजनीतिक गुरु **चित्तरंजन दास (C.R. Das)** थे।
- **तथ्य:** 23 जनवरी (नेताजी की जयंती) को भारत में 'पराक्रम दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
- **नोट:** राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी **विजय सिंह पथिक** के प्रति नेताजी का विशेष सम्मान था।

7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

घटना / संगठन	वर्ष	स्थान	मुख्य उपलब्धि
हरिपुरा अधिवेशन	1938	गुजरात	राष्ट्रीय योजना समिति का गठन।
फॉरवर्ड ब्लॉक	1939	उन्नाव / कलकत्ता	साम्राज्य-विरोधी शक्तियों का संगठन।
आजाद हिंद सरकार	1943	सिंगापुर	अस्थायी भारत सरकार की स्थापना।
INA कमान	1943	सिंगापुर	सैन्य पुनर्गठन और "दिल्ली चलो"।

wincompete

अध्याय 9: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी केवल सहायक के रूप में नहीं, बल्कि निर्णायक नेतृत्व के रूप में रही। 1857 की झांसी की रानी से लेकर 1942 की 'अगस्त क्रांति' की नायिकाओं तक, महिलाओं ने हर मोर्चे पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

1. मैडम भीकाजी कामा: 'भारतीय क्रांति की जननी'

- **योगदान:** इन्होंने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की स्वतंत्रता की आवाज उठाई।
- **ऐतिहासिक घटना:** 22 अगस्त 1907 को जर्मनी के स्टुटगार्ट में आयोजित 'इंटरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस' में उन्होंने **प्रथम भारतीय तिरंगा** फहराया।
- **उपनाम:** इन्हें 'भारतीय क्रांति की माता' (Mother of Indian Revolution) कहा जाता है।

2. एनी बेसेंट और सरोजिनी नायडू: वैधानिक एवं सत्याग्रही नेतृत्व

एनी बेसेंट (Annie Besant):

- **होम रूल लीग:** इन्होंने 1916 में मद्रास में होम रूल लीग की स्थापना की।
- **प्रथम महिला अध्यक्ष:** वे 1917 के कलकत्ता अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की **प्रथम महिला अध्यक्ष** बनीं।

सरोजिनी नायडू (Sarojini Naidu):

- **प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष:** 1925 के कानपुर अधिवेशन में वे कांग्रेस की अध्यक्ष बनीं।
- **धरसाना सत्याग्रह (1930):** नमक सत्याग्रह के दौरान गांधीजी की गिरफ्तारी के बाद उन्होंने धरसाना में अहिंसक आंदोलन का नेतृत्व किया।
- **भारत कोकिला:** इन्हें 'Nightingale of India' के नाम से जाना जाता है।

3. क्रांतिकारी एवं भूमिगत आंदोलनों की नायिकाएं

1930 के दशक और 'भारत छोड़ो' आंदोलन के दौरान महिलाओं ने प्रत्यक्ष विद्रोह का मार्ग अपनाया।

- **अरुणा आसफ अली:** 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मुंबई के 'ग्वालिया टैंक मैदान' में तिरंगा फहराया और '**अगस्त क्रांति की नायिका**' कहलाई।
- **उषा मेहता:** इन्होंने आंदोलन के दौरान गुप्त '**कांग्रेस रेडियो**' का संचालन किया।
- **बीना दास:** कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में गवर्नर पर गोली चलाई।
- **प्रीतिलता वाडेदार:** सूर्य सेन के साथ चटगांव शस्त्रागार छापे में सक्रिय भूमिका निभाई।
- **रानी गैडिनल्यू (Rani Gaidinliu):** नगालैंड की 13 वर्षीय बालिका जिसने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया। नेहरू ने उन्हें '**रानी**' की उपाधि दी।

4. राजस्थान की प्रमुख महिला स्वतंत्रता सेनानी (विशेष)

- **अंजना देवी चौधरी:** राजस्थान में गिरफ्तार होने वाली पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी (बिजोलिया और बेगू आंदोलनों के दौरान)।
- **नारायणी देवी वर्मा:** माणिक्य लाल वर्मा की पत्नी, जिन्होंने भीलवाड़ा में 'महिला आश्रम' की स्थापना की और जेल गई।
- **रतन शास्त्री:** हीरालाल शास्त्री की पत्नी, जिन्होंने 'वनस्थली विद्यापीठ' के माध्यम से महिलाओं में चेतना जगाई।

- **काली बाई:** टूंगरपुर के रास्तापाल कांड (1947) में अपने गुरु को बचाने हेतु प्राण न्यौछावर करने वाली नन्ही भील बालिका।

5. विश्लेषण: 'सशक्तीकरण' का एक नया अध्याय

गांधीजी के आंदोलनों ने भारतीय महिलाओं को घर की चौखट से बाहर निकाला। गांधीजी का मानना था कि महिलाएँ अहिंसा के शस्त्र को पुरुषों से बेहतर तरीके से चला सकती हैं क्योंकि उनमें 'सहनशक्ति' और 'नैतिक बल' अधिक होता है। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से 'रास्तापाल कांड' और 'प्रथम महिला कांग्रेस अध्यक्ष' जैसे तथ्यों को वर्ष और स्थान सहित याद रखना अनिवार्य है।

6. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

व्यक्तित्व	प्रमुख उपलब्धि / संस्था	ऐतिहासिक संदर्भ
भीकाजी कामा	प्रथम तिरंगा (स्टटगार्ट)	1907
एनी बेसेंट	होम रूल लीग, प्रथम महिला अध्यक्ष	1917
सरोजिनी नायडू	प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष	1925
कैप्टन लक्ष्मी सहगल	रानी झाँसी रेजिमेंट (INA)	1943
अंजना देवी चौधरी	राजस्थान की प्रथम जेल जाने वाली महिला	1924 (करीब)

wincompete

अध्याय 10: राजस्थान के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और जन-आंदोलन

राजस्थान में जन-जागृति का श्रेय यहाँ के किसानों, आदिवासियों और प्रजामंडल के कार्यकर्ताओं को जाता है। यहाँ का स्वतंत्रता संग्राम 'त्याग और बलिदान' की एक ऐसी गौरवगाथा है जिसने अखिल भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई ऊर्जा प्रदान की।

1. विजय सिंह पथिक और बिजोलिया किसान आंदोलन

विजय सिंह पथिक को 'भारत में किसान आंदोलन का जनक' माना जाता है।

- **बिजोलिया आंदोलन (1897-1941):** यह भारत का सबसे लंबा चलने वाला पूर्णतः अहिंसक आंदोलन था।
- **पथिक का आगमन:** इनका मूल नाम **भूप सिंह** था। इन्होंने 1916 में इस आंदोलन का नेतृत्व संभाला।
- **ऊपरमाल पंच बोर्ड:** 1917 में पथिक ने 'हरियाली अमावस्या' के दिन इसकी स्थापना की।
- **प्रसार:** इन्होंने गणेश शंकर विद्यार्थी के 'प्रताप' (कानपुर) समाचार पत्र के माध्यम से इस आंदोलन को राष्ट्रीय पहचान दिलाई।

2. गोविंद गिरी और भगत आंदोलन

राजस्थान के दक्षिणी क्षेत्र में आदिवासियों (भीलों) को संगठित करने का श्रेय गोविंद गिरी को जाता है।

- **सम्प सभा (1883):** भीलों में एकता और सामाजिक सुधार हेतु इसकी स्थापना की गई।
- **भगत आंदोलन:** भीलों को कुरीतियों से मुक्त करने और उन्हें उनके अधिकारों के प्रति सचेत करने हेतु यह आंदोलन चलाया गया।
- **मानगढ़ धाम हत्याकांड (17 नवंबर 1913):** बांसवाड़ा की मानगढ़ पहाड़ी पर सभा कर रहे भीलों पर अंग्रेजों ने गोलियां चलाईं, जिसमें 1500 भील शहीद हुए। इसे 'राजस्थान का जलियांवाला बाग' कहा जाता है।

3. जयनारायण व्यास: शेर-ए-राजस्थान

जयनारायण व्यास ने मारवाड़ (जोधपुर) में सामंती दमन के विरुद्ध जनमत तैयार किया।

- **प्रजामंडल:** इन्होंने 'मारवाड़ यूथ लीग' और 'मारवाड़ प्रजामंडल' के माध्यम से उत्तरदायी शासन की मांग की।
- **साहित्यिक योगदान:** इन्होंने 'पीप' (अंग्रेजी), 'आगीवाण' (राजस्थानी का प्रथम राजनैतिक पत्र) और 'अखंड भारत' (मुंबई से) का संपादन किया।
- **नारा:** 'पोपाबाई की पोल' और 'मारवाड़ की अवस्था' नामक पुस्तिकाओं के माध्यम से रियासती भ्रष्टाचार को उजागर किया।

4. मोतीलाल तेजावत और एकी आंदोलन (1921)

- **उद्देश्य:** भीलों और गरासियों को भारी लगान और बेगार (बिना मजदूरी काम) से मुक्त कराना।
- **मेवाड़ की पुकार:** इन्होंने मेवाड़ महाराणा के समक्ष **21 सूत्री मांग पत्र** प्रस्तुत किया।
- इन्हें आदिवासी 'बावजी' के नाम से पुकारते थे।

5. केसरी सिंह बारहट और क्रांतिकारी परिवार

राजस्थान का एकमात्र ऐसा परिवार जिसने अपनी पूरी पीढ़ी को मातृभूमि के लिए न्यौछावर कर दिया।

- **केसरी सिंह बारहट:** इन्होंने 1903 में 'चेतावनी रा चूंगट्या' (13 सोरठे) लिखकर मेवाड़ महाराणा फतेह सिंह को दिल्ली दरबार में जाने से रोककर उनके स्वाभिमान को जगाया।
- **प्रताप सिंह बारहट:** बनारस षड्यंत्र केस में गिरफ्तार हुए। जेल में अमानवीय यातनाओं के दौरान उन्होंने कहा था— "मेरी माँ को रोने दो ताकि भारत की कोई और माँ न रोए।"

6. विश्लेषण: रियासती राजस्थान का विशिष्ट चरित्र

राजस्थान का संघर्ष ब्रिटिश भारत से भिन्न था। यहाँ 'प्रजामंडलों' का मुख्य संघर्ष सीधे अंग्रेजों से न होकर स्थानीय राजाओं से 'उत्तरदायी शासन' (Responsible Government) प्राप्त करने के लिए था। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से 'मानगढ़ हत्याकांड की तिथि' और 'विभिन्न रियासतों के प्रजामंडल की स्थापना के वर्ष' अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। पथिक, व्यास और शास्त्री जैसे नेताओं ने राजस्थान को भौगोलिक सीमाओं से निकालकर राष्ट्रीय राजनीति के मुख्य विमर्श में स्थापित किया।

7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

सेनानी / आंदोलन	मुख्य केंद्र	विशेष उपलब्धि / नारा
विजय सिंह पथिक	बिजोलिया	राजस्थान सेवा संघ (1919), वर्धा।
गोविंद गिरी	बांसवाड़ा / डूंगरपुर	सम्प सभा, मानगढ़ नरसंहार (1913)।
जयनारायण व्यास	मारवाड़ (जोधपुर)	आगीवाण, शेर-ए-राजस्थान।
हीरालाल शास्त्री	जयपुर	ज्योतिर्गर, 'प्रलय प्रतीक्षा नमो नमः'।
मोतीलाल तेजावत	चित्तौड़ (मातृकुंडिया)	एकी आंदोलन, मेवाड़ की पुकार।

wincompete

स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र निर्माण: राज्यों का भाषाई पुनर्गठन

अध्याय 11: रियासतों के विलय की प्रक्रिया और प्रारंभिक चुनौतियां (1947-1950)

15 अगस्त 1947 को भारत को राजनैतिक स्वतंत्रता तो मिली, लेकिन भौगोलिक और प्रशासनिक रूप से यह एक विखंडित राष्ट्र था। एक तरफ ब्रिटिश प्रांत थे और दूसरी तरफ 562 से अधिक देशी रियासतें। इन रियासतों को एक सूत्र में पिरोना और विभाजन से उपजी समस्याओं का समाधान करना नव-स्वतंत्र भारत की पहली अग्निपरीक्षा थी।

1. विलेय पत्र (Instrument of Accession - IoA)

विलेय पत्र वह वैधानिक दस्तावेज था जिसके माध्यम से देशी रियासतों ने भारतीय संघ में शामिल होने की औपचारिक स्वीकृति दी।

- **तीन प्रमुख विषय:** विलेय पत्र के तहत रियासतों ने केवल तीन विषयों का नियंत्रण भारत सरकार को सौंपा:
 1. **रक्षा (Defense)**
 2. **विदेश मामले (External Affairs)**
 3. **संचार (Communications)**
- **वैधानिक आधार:** यह भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 के प्रावधानों के तहत तैयार किया गया था।
- **स्वायत्तता:** प्रारंभ में यह आश्वासन दिया गया था कि इन तीन विषयों के अलावा रियासतें अपने आंतरिक मामलों में स्वतंत्र रहेंगी।

2. प्रिवी पर्स (Privy Purse) और विशेषाधिकार

रियासतों के स्वेच्छा से भारत में विलय को प्रोत्साहित करने के लिए सरदार पटेल ने राजाओं को आर्थिक सुरक्षा का आश्वासन दिया।

- **अर्थ:** राजाओं को उनके राजसी खर्चों और दायित्वों की पूर्ति के लिए भारत के संचित कोष से दी जाने वाली वार्षिक धनराशि।
- **निर्धारण:** इसकी राशि रियासत के राजस्व और आकार के आधार पर तय की गई थी।
- **संवैधानिक गारंटी:** प्रिवी पर्स को संविधान के **अनुच्छेद 291 और 362** के तहत वैधानिक मान्यता दी गई।
- **निष्कर्ष:** यह एक 'जरूरी समझौता' था जिसने बिना किसी बड़े गृहयुद्ध के भारत का एकीकरण सुनिश्चित किया।

3. शरणार्थी समस्या और पुनर्वास (Refugee Crisis)

विभाजन के कारण हुए सामूहिक विस्थापन ने भारत के सामने एक अभूतपूर्व मानवीय और आर्थिक संकट खड़ा कर दिया।

- **विस्थापन का पैमाना:** लगभग 80 लाख लोग पाकिस्तान से भारत आए।
- **पुनर्वास मंत्रालय:** भारत सरकार ने शरणार्थियों के आवास, भोजन और रोजगार के लिए एक समर्पित पुनर्वास मंत्रालय का गठन किया।
- **चुनौतियां:** दिल्ली, पंजाब और पश्चिम बंगाल में शरणार्थी शिविरों की स्थापना की गई। 'निष्क्रांत संपत्ति' (Evacuee Property) का प्रबंधन एक जटिल कार्य था, जिसमें पाकिस्तान गए लोगों की संपत्ति को शरणार्थियों में वितरित करना शामिल था।

- **सामाजिक प्रभाव:** इस समस्या ने भारत की अर्थव्यवस्था पर भारी दबाव डाला, लेकिन सरकार ने धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों को बनाए रखते हुए सभी शरणार्थियों के कल्याण का प्रयास किया।

4. प्रशासनिक एकीकरण की अन्य चुनौतियां

- **सेना का एकीकरण:** विभिन्न रियासतों की अपनी सेनाएं थीं, जिन्हें भारतीय थल सेना के ढांचे में समाहित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था।
- **विविध कानून:** प्रत्येक रियासत के अपने कानून और प्रशासनिक नियम थे। पूरे देश में एक समान कानूनी संहिता लागू करना आवश्यक था।
- **अल्पसंख्यक सुरक्षा:** विभाजन की हिंसा के बीच भारत में रह रहे अल्पसंख्यकों का विश्वास जीतना नेहरू सरकार की सबसे बड़ी प्राथमिकता थी।

5. विश्लेषण: एकीकरण की 'दोहरी' प्रक्रिया

भारत का एकीकरण केवल मानचित्र पर रेखाएं खींचना नहीं था। यह दो स्तरों पर हुआ: पहला, **राजनैतिक विलय** (विलेय पत्र के माध्यम से) और दूसरा, **प्रशासनिक एकीकरण** (रियासतों को प्रांतों में मिलाकर)। प्रिंसीपल को अक्सर 'सामंती अवशेष' कहा जाता है, लेकिन 1947 की परिस्थितियों में यह राष्ट्रीय एकता के लिए दी गई एक 'कीमत' थी। परीक्षाओं की दृष्टि से **'विलेय पत्र के तीन विषयों'** और **'शरणार्थी समस्या के आर्थिक निहितार्थ'** को समझना अनिवार्य है।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (विशेष)

- **तथ्य:** राजस्थान की रियासतों में सर्वप्रथम **बीकानेर** के महाराजा शार्दूल सिंह ने विलेय पत्र पर हस्ताक्षर किए थे (7 अगस्त 1947)।
- **तथ्य:** 'प्रिंसीपल' को अंततः 1971 में **26वें संविधान संशोधन** द्वारा समाप्त किया गया।
- **तथ्य:** शरणार्थी पुनर्वास के लिए **'फरीदाबाद'** और **'नीलोखेड़ी'** जैसे नए शहरों की योजना बनाई गई थी।

7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

विषय	आधिकारिक स्थिति (1947-50)	मुख्य प्रभाव
विलेय पत्र	रक्षा, विदेश, संचार का हस्तांतरण	भौगोलिक एकता।
प्रिंसीपल	राजाओं को वार्षिक भुगतान	रियासतों का शांतिपूर्ण समर्पण।
पुनर्वास मंत्रालय	शरणार्थियों का सहायता तंत्र	मानवीय संकट का समाधान।
रियासती विभाग	सरदार पटेल एवं वी.पी. मेनन	एकीकरण का मुख्य इंजन।

अध्याय 12: राज्यों के भाषाई पुनर्गठन की मांग और प्रारंभिक समितियां

स्वतंत्रता के समय भारत का प्रशासनिक ढांचा औपनिवेशिक विरासत पर आधारित था, जिसमें राज्यों का गठन ऐतिहासिक विकास और राजनैतिक समझौतों के आधार पर किया गया था, न कि भाषाई या सांस्कृतिक आधार पर। 1950 के संविधान के तहत भारत को चार प्रकार के राज्यों (भाग A, B, C और D) में विभाजित किया गया था, लेकिन दक्षिण भारत में उठ रही भाषाई राज्यों की मांग ने इस ढांचे को चुनौती दी।

1. एस.के. धर आयोग (Dhar Commission, 1948)

भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की बढ़ती मांग की जाँच के लिए जून 1948 में संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने एस.के. धर (इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश) की अध्यक्षता में 'भाषाई प्रांत आयोग' का गठन किया।

- **सिफारिशें (दिसंबर 1948):** आयोग ने भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का **कड़ा विरोध** किया।
- **मुख्य तर्क:** आयोग का मानना था कि भाषा के आधार पर राज्यों का निर्माण राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा पैदा कर सकता है। इसके बजाय, पुनर्गठन का आधार '**प्रशासनिक सुविधा**' (Administrative Convenience), भौगोलिक निरंतरता और आर्थिक आत्मनिर्भरता होनी चाहिए।

2. जे.वी.पी. समिति (JVP Committee, 1948)

धर आयोग की रिपोर्ट से दक्षिण भारत (विशेषकर तेलुगु भाषियों) में असंतोष बढ़ा। इसके समाधान हेतु कांग्रेस ने दिसंबर 1948 में जयपुर अधिवेशन के दौरान एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया।

- **सदस्य:** इस समिति में तीन प्रमुख व्यक्ति शामिल थे, जिनके नाम के पहले अक्षर पर इसका नाम पड़ा:
 1. जवाहरलाल नेहरू (J)
 2. वल्लभभाई पटेल (V)
 3. पट्टाभि सीतारमैया (P)
- **रिपोर्ट (अप्रैल 1949):** इस समिति ने भी भाषाई आधार पर पुनर्गठन की मांग को **औपचारिक रूप से खारिज** कर दिया।
- **तर्क:** समिति ने तर्क दिया कि विभाजन की त्रासदी के बाद देश की पहली प्राथमिकता 'सुरक्षा, एकता और आर्थिक विकास' होनी चाहिए। भाषा के आधार पर विभाजन देश को 'बाल्कनीकरण' (विखंडन) की ओर ले जा सकता है। हालाँकि, समिति ने यह द्वार खुला रखा कि यदि जनमत बहुत अधिक तीव्र हो, तो भविष्य में इस पर विचार किया जा सकता है।

3. भाषाई आधार के प्रति नेहरू का प्रारंभिक दृष्टिकोण

पंडित नेहरू प्रारंभ में भाषाई राज्यों के निर्माण के प्रति अत्यंत आशंकित थे। उनके दृष्टिकोण के मुख्य बिंदु निम्नलिखित थे:

- **Pandora's Box (भानुमती का पिटारा):** नेहरू का मानना था कि यदि एक बार भाषाई आधार को स्वीकार कर लिया गया, तो पूरे देश में अंतहीन मांगें उठने लगेंगी, जिससे राष्ट्रीय विकास के मुख्य मुद्दे (गरीबी, औद्योगिकीकरण) पीछे छूट जाएंगे।
- **सुरक्षा सर्वोपरि:** विभाजन की सांप्रदायिक हिंसा ने नेहरू को क्षेत्रीय अस्मिताओं के प्रति सतर्क कर दिया था। वे भारत को एक 'मजबूत केंद्र' वाली इकाई के रूप में देखना चाहते थे।
- **विकासवादी दृष्टिकोण:** उनका तर्क था कि प्रशासनिक सीमाओं के बजाय आर्थिक संसाधनों का समुचित वितरण विकास का आधार होना चाहिए।

4. विश्लेषण: 'धर आयोग' और 'जे.वी.पी.' की असफलता का कारण

धर आयोग और जे.वी.पी. समिति दोनों ने तकनीकी और सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से मांग को परखा, लेकिन वे दक्षिण भारत की 'सांस्कृतिक आकांक्षाओं' की तीव्रता को नहीं समझ सके। ये समितियाँ 'टॉप-डाउन' (ऊपर से नीचे) एप्रोच पर आधारित थीं, जबकि मांग 'बॉटम-अप' (नीचे से ऊपर) जन-आंदोलन के रूप में थी। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जे.वी.पी. समिति का गठन कांग्रेस के जयपुर अधिवेशन में हुआ था, जो राजस्थान के संदर्भ में एक विशेष तथ्य है।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (विशेष)

- **तथ्य:** धर आयोग में कुल **तीन सदस्य** थे (एस.के. धर, जगत नारायण लाल और पन्ना लाल)।
- **तथ्य:** जे.वी.पी. समिति ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट किया था कि "राज्यों के पुनर्गठन का वर्तमान समय (1949) उचित नहीं है।"
- **तथ्य:** 1950 के संविधान के अनुसार राजस्थान को '**भाग-B**' (Part-B) श्रेणी का राज्य बनाया गया था।
- **नोट:** भाषाई राज्यों की मांग का बीज 1920 के कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में ही बो दिया गया था, जहाँ कांग्रेस ने स्वयं के संगठनात्मक ढाँचे को भाषाई आधार पर पुनर्गठित किया था।

. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Scan)

आयोग / समिति	वर्ष (गठन)	अध्यक्ष / सदस्य	मुख्य अनुशंसा
एस.के. धर आयोग	जून 1948	एस.के. धर	प्रशासनिक सुविधा को वरीयता, भाषा को नकारना।
जे.वी.पी. समिति	दिसंबर 1948	नेहरू, पटेल, सीतारमैया	राष्ट्रीय एकता हेतु भाषा के आधार पर पुनर्गठन का विरोध।
कांग्रेस जयपुर अधिवेशन	1948	पट्टाभि सीतारमैया (अध्यक्ष)	इसी अधिवेशन में जे.वी.पी. समिति बनी।

अध्याय 13: आंध्र प्रदेश का निर्माण और राज्य पुनर्गठन आयोग (1953-1956)

जे.वी.पी. समिति द्वारा भाषाई पुनर्गठन को टाले जाने के बाद भी जन-आकांक्षाएं शांत नहीं हुईं। मद्रास प्रेसीडेंसी के तेलुगु भाषियों का आंदोलन एक ऐसे मोड़ पर पहुँच गया जिसने भारत सरकार को अपनी नीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए विवश कर दिया।

1. पोद्दी श्रीरामुलु का बलिदान और आंध्र प्रदेश का जन्म

तेलुगु भाषी क्षेत्रों के लिए अलग 'आंध्र राज्य' की मांग को लेकर गांधीवादी कार्यकर्ता **पोद्दी श्रीरामुलु** ने 19 अक्टूबर 1952 को आमरण अनशन प्रारंभ किया।

- **ऐतिहासिक अनशन:** 56 दिनों के कड़े अनशन के बाद **15 दिसंबर 1952** को उनका निधन हो गया।
- **परिणाम:** उनके निधन के बाद मद्रास और आंध्र क्षेत्रों में व्यापक हिंसा और विरोध प्रदर्शन हुए। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए प्रधानमंत्री नेहरू ने तत्काल अलग आंध्र राज्य की घोषणा की।
- **प्रथम भाषाई राज्य:** 1 अक्टूबर 1953 को **आंध्र राज्य** (मद्रास से अलग होकर) भाषाई आधार पर गठित होने वाला **भारत का पहला राज्य** बना। इसकी प्रारंभिक राजधानी **कर्नूल** थी।

2. राज्य पुनर्गठन आयोग (SRC): फजल अली आयोग

आंध्र प्रदेश के निर्माण ने पूरे देश में भाषाई राज्यों की मांग को तीव्र कर दिया। इसके समाधान हेतु दिसंबर 1953 में भारत सरकार ने **राज्य पुनर्गठन आयोग (SRC)** की नियुक्ति की।

- **अध्यक्ष एवं सदस्य:** इस आयोग में तीन प्रमुख सदस्य थे:
 1. **न्यायमूर्ति फजल अली** (अध्यक्ष)
 2. **के.एम. पणिकर** (राजस्थान से संबंध: बीकानेर रियासत के पूर्व प्रधानमंत्री)
 3. **एच.एन. कुंजरू** (हृदयनाथ कुंजरू)
- **रिपोर्ट (सितंबर 1955):** आयोग ने अपनी रिपोर्ट में 'एक भाषा-एक राज्य' के सिद्धांत को तो खारिज किया, लेकिन **भाषा को पुनर्गठन का प्रमुख आधार** स्वीकार कर लिया।

3. आयोग की मुख्य सिफारिशें

आयोग ने संतुलित विकास और राष्ट्रीय सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित सुझाव दिए:

- **राज्यों का वर्गीकरण समाप्त करना:** संविधान के तहत प्रचलित भाग A, B, C और D श्रेणियों को पूरी तरह समाप्त किया जाए।
- **प्रस्तावित ढांचा:** आयोग ने **16 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों** के निर्माण का सुझाव दिया था।
- **विविध आधार:** भाषा के साथ-साथ प्रशासनिक सुविधा, वित्तीय आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय एकता को भी पैमाना माना गया।

4. राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956

सरकार ने आयोग की सिफारिशों को कुछ संशोधनों के साथ स्वीकार किया और **राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956** पारित किया। इसके परिणामस्वरूप **1 नवंबर 1956** को भारत का नया राजनैतिक मानचित्र सामने आया।

- **कुल इकाइयां:** भारत को **14 राज्यों और 6 केंद्र शासित प्रदेशों** में विभाजित किया गया।

- **14 राज्य:** आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, बॉम्बे, जम्मू और कश्मीर, केरल, मध्य प्रदेश, मद्रास, मैसूर, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल।
- **6 केंद्र शासित प्रदेश:** अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, लकादीव-मिनिक्ॉय एवं अमीनदीवी द्वीप समूह, मणिपुर और त्रिपुरा।

5. विश्लेषण: भाषाई राज्यों का प्रभाव

आलोचकों को भय था कि भाषाई राज्य भारत के विखंडन का कारण बनेंगे, लेकिन परिणाम इसके विपरीत रहे। भाषा के आधार पर राज्यों के निर्माण ने स्थानीय संस्कृति को सुरक्षा दी और प्रशासन को जनता की भाषा के करीब लाया, जिससे भारतीय लोकतंत्र और अधिक 'विकेंद्रीकृत' एवं मजबूत हुआ। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से **फजल अली आयोग की तिथि और अधिनियम के बाद राज्यों/UTs की संख्या** (14 और 6) अत्यंत महत्वपूर्ण है।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (विशेष)

- **तथ्य:** राज्य पुनर्गठन अधिनियम (1956) के तहत ही **1 नवंबर 1956** को राजस्थान का एकीकरण पूर्ण हुआ।
- **तथ्य:** **अजमेर-मेरवाड़ा**, आबू तहसील और मध्य प्रदेश का **सुनेल टप्पा** क्षेत्र इसी अधिनियम के तहत राजस्थान में विलीन हुए।
- **तथ्य:** फजल अली आयोग के सदस्य **के.एम. पणिक्कर** ने राजस्थान की रियासतों के एकीकरण में भी महत्वपूर्ण सलाहकारी भूमिका निभाई थी।
- **नोट:** 1956 में राजस्थान 'भाग-B' श्रेणी से निकलकर एक 'पूर्ण राज्य' (Status of State) बना और 'राजप्रमुख' का पद समाप्त कर '**राज्यपाल**' का पद सृजित किया गया।

7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

ऐतिहासिक पड़ाव	तिथि / वर्ष	मुख्य घटना / परिणाम
पोट्टी श्रीरामुलु का निधन	15 दिसंबर 1952	आंध्र आंदोलन का तीव्र होना।
आंध्र राज्य का गठन	1 अक्टूबर 1953	प्रथम भाषाई राज्य (राजधानी: कर्नूल)।
SRC का गठन	दिसंबर 1953	फजल अली, पणिक्कर, कुंजरू।
अधिनियम प्रभावी	1 नवंबर 1956	14 राज्य और 6 केंद्र शासित प्रदेश।
राजप्रमुख पद का अंत	1 नवंबर 1956	राजस्थान में राज्यपाल पद का प्रारंभ।

अध्याय 14: राजस्थान का एकीकरण: सात चरणों का आधिकारिक विवरण

राजस्थान का एकीकरण 18 मार्च 1948 से प्रारंभ होकर 1 नवंबर 1956 तक कुल सात चरणों में पूर्ण हुआ। इस प्रक्रिया में कुल 8 वर्ष, 7 माह और 14 दिन का समय लगा।

प्रथम चरण: मत्स्य संघ (18 मार्च, 1948)

- **रियासतें:** अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली (ABCD)।
- **ठिकाना:** नीमराणा (अलवर)।
- **राजधानी:** अलवर।
- **राजप्रमुख:** उदयभान सिंह (धौलपुर महाराजा)।
- **प्रधानमंत्री:** शोभाराम कुमावत (अलवर)।
- **विशेष तथ्य:** के.एम. मुंशी के सुझाव पर इसका नाम 'मत्स्य संघ' रखा गया। उद्घाटन एन.वी. गाडगिल ने किया।

द्वितीय चरण: पूर्व राजस्थान / राजस्थान संघ (25 मार्च, 1948)

- **रियासतें (9):** कोटा, बूंदी, झालावाड़, टोंक, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, किशनगढ़, शाहपुरा।
- **ठिकाना:** कुशलगढ़ (बांसवाड़ा)।
- **राजधानी:** कोटा।
- **राजप्रमुख:** भीमसिंह (कोटा महाराव)।
- **प्रधानमंत्री:** गोकुल लाल असावा (शाहपुरा)।
- **विशेष तथ्य:** बांसवाड़ा के महाराजा चंद्रवीर सिंह ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते समय कहा था— "मैं अपने डेथ वारंट (Death Warrant) पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ।"

तृतीय चरण: संयुक्त राजस्थान (18 अप्रैल, 1948)

- **विलय:** राजस्थान संघ में उदयपुर (मेवाड़) का विलय।
- **राजधानी:** उदयपुर।
- **राजप्रमुख:** भूपाल सिंह (मेवाड़ महाराणा)।
- **प्रधानमंत्री:** माणिक्य लाल वर्मा।
- **विशेष तथ्य:** इसका उद्घाटन पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया।

चतुर्थ चरण: वृहद् राजस्थान (30 मार्च, 1949)

- **रियासतें (4 बड़ी):** जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर (JJBJ)।
- **ठिकाना:** लावा (टोंक)।
- **राजधानी:** जयपुर (पी. सत्यनारायण राव समिति की सिफारिश पर)।
- **महाराजप्रमुख:** भूपाल सिंह (एकमात्र)।
- **राजप्रमुख:** सवाई मानसिंह II (जयपुर)।
- **प्रधानमंत्री:** हीरालाल शास्त्री।
- **विशेष तथ्य:** 30 मार्च को 'राजस्थान दिवस' के रूप में मनाया जाता है। उद्घाटन सरदार पटेल ने किया।

पंचम चरण: संयुक्त वृहद् राजस्थान (15 मई, 1949)

- **विलय:** वृहद् राजस्थान में मत्स्य संघ का विलय।
- **समिति:** डॉ. शंकरराव देव समिति की सिफारिश पर।
- **प्रधानमंत्री:** हीरालाल शास्त्री (प्रथम मनोनीत मुख्यमंत्री)।

षष्ठ चरण: राजस्थान संघ (26 जनवरी, 1950)

- **विलय:** सिरौही का विलय (आबू एवं देलवाड़ा तहसील को छोड़कर)।
- **विशेष तथ्य:** भारत का संविधान लागू हुआ और राजस्थान को 'B' श्रेणी (भाग-ख) के राज्य की मान्यता मिली।

सप्तम चरण: पुनर्गठित राजस्थान (1 नवंबर, 1956)

- विलय: अजमेर-मेरवाड़ा (केंद्र शासित), आबू-देल्वाड़ा (सिरोही) और मध्य प्रदेश का सुनेल टप्पा क्षेत्र।
- हस्तांतरण: झालावाड़ का सिरोंज क्षेत्र मध्य प्रदेश को दिया गया।
- विशेष तथ्य: राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 के तहत राजप्रमुख का पद समाप्त कर राज्यपाल (प्रथम: गुरुमुख निहाल सिंह) का पद सृजित किया गया।

एकीकरण का त्वरित संदर्भ (Quick Summary Table)

चरण	नाम	तिथि	राजधानी	राजप्रमुख	प्रधानमंत्री / मुख्यमंत्री
1	मत्स्य संघ	18.03.1948	अलवर	उदयभान सिंह	शोभाराम कुमावत
2	पूर्व राजस्थान	25.03.1948	कोटा	भीमसिंह	गोकुल लाल असावा
3	संयुक्त राजस्थान	18.04.1948	उदयपुर	भूपाल सिंह	माणिक्य लाल वर्मा
4	वृहद् राजस्थान	30.03.1949	जयपुर	मानसिंह II	हीरालाल शास्त्री
5	संयुक्त वृहद्	15.05.1949	जयपुर	मानसिंह II	हीरालाल शास्त्री
6	राजस्थान संघ	26.01.1950	जयपुर	मानसिंह II	हीरालाल शास्त्री
7	पुनर्गठित राज.	01.11.1956	जयपुर	(राज्यपाल)	मोहनलाल सुखाड़िया

विश्लेषण: एकीकरण की जटिलताएँ

राजस्थान का एकीकरण केवल रियासतों का मिलना नहीं था, बल्कि विभिन्न 'हितों' का समन्वय था। सत्यनारायण राव समिति ने केवल राजधानी (जयपुर) ही तय नहीं की, बल्कि न्यायपालिका (जोधपुर), शिक्षा (बीकानेर), खनिज (उदयपुर) और कृषि (भरतपुर) विभागों का बँटवारा कर क्षेत्रीय असंतोष को थामने का

प्रयास किया। परीक्षाओं की दृष्टि से **चौथे चरण** (राजस्थान दिवस) और **सातवें चरण** (राज्यपाल पद का सृजन) की वैधानिक बारीकियों को समझना अनिवार्य है।

महत्वपूर्ण तथ्य

- **तथ्य:** राजस्थान की रियासतों में सबसे पुरानी रियासत **मेवाड़** और सबसे नवीन रियासत **झालावाड़** (अंग्रेजों द्वारा निर्मित) थी।
- **तथ्य:** क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ी रियासत **मारवाड़** और सबसे छोटी **शाहपुरा** थी।
- **तथ्य:** **बांसवाड़ा, झुंजरपुर और कुशलगढ़** को मिलाकर वागड़ राज्य बनाने का प्रयास किया गया था, जिसे 'लक्ष्मण सिंह' का 'वागड़ संघ' विचार कहा जाता है।

अध्याय 15: 1956 के बाद राज्यों का पुनर्गठन (बॉम्बे से पूर्वोत्तर तक)

1956 में 14 राज्यों और 6 केंद्र शासित प्रदेशों के गठन के बाद भी भारत के कई हिस्सों में अलग राज्यों की मांग जारी रही। यह मांगें मुख्य रूप से भाषाई, सांस्कृतिक भिन्नता और आर्थिक पिछड़ेपन पर आधारित थीं।

1. बॉम्बे पुनर्गठन: महाराष्ट्र और गुजरात (1960)

1956 में द्विभाषी 'बॉम्बे राज्य' बनाया गया था, जिसमें मराठी और गुजराती दोनों भाषी क्षेत्र शामिल थे।

- **आंदोलन:** 'संयुक्त महाराष्ट्र समिति' और 'महागुजरात परिषद' ने अलग राज्यों हेतु तीव्र आंदोलन चलाए।
- **विभाजन:** 1 मई 1960 को बॉम्बे राज्य को दो भागों में विभाजित किया गया:
 1. **महाराष्ट्र:** मराठी भाषी क्षेत्र।
 2. **गुजरात:** गुजराती भाषी क्षेत्र (यह भारतीय संघ का **15वाँ राज्य** बना)।

2. नागालैंड का गठन (1963)

पूर्वोत्तर भारत में उग्रवाद और अलगाववाद को शांत करने हेतु भारत सरकार ने नागा पहाड़ियों और 'त्वेनसांग' क्षेत्र को मिलाकर नागालैंड के निर्माण की घोषणा की।

- **विशेष दर्जा:** 1960 में हुए 16-सूत्रीय समझौते के बाद **1 दिसंबर 1963** को नागालैंड भारत का **16वाँ राज्य** बना। इसे संविधान के **अनुच्छेद 371-A** के तहत विशेष सुरक्षा प्रदान की गई।

3. पंजाब पुनर्गठन: हरियाणा और हिमाचल (1966)

पंजाब में 'पंजाबी सूबा' आंदोलन (नेतृत्व: मास्टर तारा सिंह) के कारण भाषाई और धार्मिक आधार पर तनाव बढ़ा।

- **शाह आयोग (1966):** सरकार ने राज्यों के सीमा निर्धारण हेतु न्यायमूर्ति जे.सी. शाह की अध्यक्षता में आयोग गठित किया।
- **परिणाम:** 1 नवंबर 1966 को पंजाब का विभाजन हुआ:
 1. **हरियाणा:** हिंदी भाषी क्षेत्र (17वाँ राज्य)।
 2. **हिमाचल प्रदेश:** पहाड़ी क्षेत्र (प्रारंभ में UT, बाद में 1971 में 18वाँ राज्य बना)।
 3. **चंडीगढ़:** दोनों की साझा राजधानी और केंद्र शासित प्रदेश।

4. पूर्वोत्तर राज्यों का पुनर्गठन (1972)

1972 में 'पूर्वोत्तर क्षेत्र पुनर्गठन अधिनियम' के माध्यम से मानचित्र में बड़ा बदलाव आया:

- **मणिपुर और त्रिपुरा:** केंद्र शासित प्रदेश से पूर्ण राज्य बने।
- **मेघालय:** असम के भीतर से काटकर एक नया पूर्ण राज्य बनाया गया।
- **मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश:** इन्हें केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया (जो बाद में 1987 में पूर्ण राज्य बने)।

5. सिक्किम का विलय: एक ऐतिहासिक अपवाद (1975)

सिक्किम प्रारंभ में भारत का 'रक्षित राज्य' (Protectorate State) था।

- **35वाँ संशोधन (1974):** सिक्किम को 'सह-राज्य' (Associate State) का दर्जा दिया गया।

- **36वाँ संशोधन (1975):** जनमत संग्रह के बाद चोग्याल शासन समाप्त हुआ और सिक्किम भारत का 22वाँ पूर्ण राज्य बना।

6. विश्लेषण: पुनर्गठन की प्रकृति

1956 के बाद का पुनर्गठन यह सिद्ध करता है कि भारतीय संघ 'विनाशी राज्यों का अविनाशी संघ' है। संसद को अनुच्छेद 3 के तहत किसी भी राज्य की सीमा बदलने का अनन्य अधिकार है। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से राज्यों के गठन का क्रम (Chronology) और संबंधित आयोगों के नाम सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि भारतीय लोकतंत्र विविधता को दबाने के बजाय उसे 'प्रशासनिक पहचान' देकर मुख्यधारा में शामिल करने में विश्वास करता है।

7. त्वरित संदर्भ तालिका (गठन का कालक्रम)

राज्य	गठन वर्ष	क्रम (Status)	मुख्य कारण
गुजरात	1960	15वाँ	भाषाई (बॉम्बे से अलग)
नागालैंड	1963	16वाँ	जातीय और राजनैतिक समझौता
हरियाणा	1966	17वाँ	भाषाई (पंजाब से अलग)
हिमाचल प्रदेश	1971	18वाँ	पहाड़ी पहचान (UT से राज्य)
सिक्किम	1975	22वाँ	जनमत संग्रह (विलय)
छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, झारखंड	2000	26, 27, 28वाँ	प्रशासनिक और आर्थिक विकास
तेलंगाना	2014	29वाँ (अब 28)	क्षेत्रीय उपेक्षा और आंदोलन

8. महत्वपूर्ण तथ्य (विशेष)

- **तथ्य: 2019** में जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम द्वारा J&K राज्य का दर्जा समाप्त कर उसे दो केंद्र शासित प्रदेशों (J&K और लद्दाख) में विभाजित किया गया।
- **तथ्य:** वर्तमान में भारत में **28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश** हैं (दादरा-नगर हवेली और दमन-दीव के विलय के बाद)।
- **नोट:** गोवा, दमन और दीव को 1961 में 'ऑपरेशन विजय' द्वारा पुर्तगालियों से मुक्त कराया गया था।

स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र निर्माण: नेहरू युग (1947-1964)

अध्याय 16: नेहरू का दृष्टिकोण: आधुनिक भारत का वास्तुकार

जवाहरलाल नेहरू केवल भारत के प्रथम प्रधानमंत्री नहीं थे, बल्कि वे आधुनिक भारतीय राज्य के 'प्रधान वास्तुकार' (Chief Architect) थे। उन्होंने एक ऐसे राष्ट्र की नींव रखी जो अपनी प्राचीन सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ा हो, लेकिन जिसकी दृष्टि भविष्योन्मुखी और वैश्विक हो। उनका दृष्टिकोण मुख्य रूप से चार स्तंभों पर आधारित था: लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद और वैज्ञानिक दृष्टिकोण।

1. लोकतांत्रिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण

नेहरू का लोकतंत्र में अटूट विश्वास था। उनका मानना था कि भारत जैसी विविधतापूर्ण भूमि को केवल लोकतांत्रिक माध्यम से ही एकजुट रखा जा सकता है।

- **संस्थागत निर्माण:** उन्होंने संसद, न्यायपालिका और स्वतंत्र चुनाव आयोग जैसी संस्थाओं को सर्वोच्च सम्मान दिया। उन्होंने सुनिश्चित किया कि संसद नीतियों के निर्धारण का मुख्य केंद्र बनी रहे।
- **वयस्क मताधिकार:** कई विकसित देशों के विपरीत, नेहरू ने नव-स्वतंत्र और अशिक्षित भारत में 'सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार' का साहसपूर्ण निर्णय लिया। 1951-52 के प्रथम आम चुनाव को उन्होंने "भारतीय जनता का अपनी नियति के साथ सबसे बड़ा प्रयोग" कहा।
- **विकेंद्रीकरण:** उन्होंने सत्ता को केवल दिल्ली तक सीमित नहीं रखा। 1959 में राजस्थान के नागौर से पंचायती राज का शुभारंभ उनके इसी 'तृणमूल लोकतंत्र' (Grassroots Democracy) के विजन का हिस्सा था।

2. धर्मनिरपेक्षता (Secularism): साझा संस्कृति का आधार

नेहरू के लिए धर्मनिरपेक्षता (पंथनिरपेक्षता) का अर्थ 'धर्म-विरोध' नहीं, बल्कि 'सर्वधर्म समभाव' और राज्य का अपना कोई धर्म न होना था।

- **सांप्रदायिकता के विरुद्ध संघर्ष:** विभाजन की त्रासदी के बाद, नेहरू ने दृढ़ता से स्पष्ट किया कि भारत एक 'हिंदू राष्ट्र' नहीं बल्कि एक ऐसा धर्मनिरपेक्ष देश होगा जहाँ अल्पसंख्यकों को समान नागरिक अधिकार प्राप्त होंगे।
- **वैज्ञानिक राष्ट्रवाद:** उन्होंने धर्म को व्यक्तिगत आस्था का विषय माना और सार्वजनिक जीवन में तर्क और नैतिकता को प्राथमिकता दी।
- **अनेकता में एकता:** उन्होंने इस विचार को बल दिया कि भारत की शक्ति उसकी विविधता में है। उनके इसी दृष्टिकोण के कारण भारत एक 'सांस्कृतिक मोजेक' के रूप में विकसित हो सका।

3. वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Temper)

नेहरू ने 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' शब्द का प्रयोग अपनी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में किया था। वे विज्ञान को केवल तकनीक नहीं, बल्कि 'जीवन जीने का एक तरीका' मानते थे।

- **वैज्ञानिक नीति संकल्प (1958):** उनके नेतृत्व में भारत सरकार ने वैज्ञानिक शोध को बढ़ावा देने हेतु एक आधिकारिक नीति अपनाई।
- **आधुनिक भारत के मंदिर:** नेहरू ने बड़े बांधों (जैसे भाखड़ा-नांगल), इस्पात संयंत्रों और बिजली परियोजनाओं को "आधुनिक भारत के मंदिर" (Temples of Modern India) की संज्ञा दी। उनका मानना था कि ये परियोजनाएं भारत को गरीबी और अंधविश्वास से मुक्त करेंगी।
- **संस्थानों की स्थापना:** परमाणु ऊर्जा आयोग (1948), CSIR की प्रयोगशालाएं और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (IITs) की श्रृंखला उनके 'प्रगतिशील भारत' के सपने की परिणति थी।

4. नेहरूवादी समाजवाद (Nehruvian Socialism)

नेहरू एक 'कल्याणकारी राज्य' (Welfare State) की स्थापना करना चाहते थे, जहाँ आर्थिक विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे।

- **मिश्रित अर्थव्यवस्था:** उन्होंने निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों के सह-अस्तित्व वाली 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' का मॉडल चुना।
- **नियोजित विकास:** रूस के अनुभव से प्रेरित होकर उन्होंने 1950 में **योजना आयोग** का गठन किया और 'पंचवर्षीय योजनाओं' के माध्यम से औद्योगिक आत्मनिर्भरता का लक्ष्य रखा।

5. विश्लेषण: नेहरू युग का ऐतिहासिक मूल्यांकन

नेहरू का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने नव-स्वतंत्र भारत को एक 'दृष्टि' (Vision) प्रदान की। जहाँ एशिया और अफ्रीका के कई देश स्वतंत्रता के बाद तानाशाही या सैन्य शासन की चपेट में आ गए, वहीं भारत में नेहरू ने लोकतंत्र की जड़ों को इतना गहरा कर दिया कि वे आज भी अडिग हैं। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से 'नागौर पंचायती राज (1959)' और 'प्रथम आम चुनाव' के साथ नेहरू के 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' की अवधारणा का वैचारिक महत्व समझना अनिवार्य है।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (विशेष)

- **तथ्य:** नेहरू ने 2 अक्टूबर 1959 को राजस्थान के **नागौर** से त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का उद्घाटन किया था।
- **तथ्य:** 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' (भारत की खोज) पुस्तक उन्होंने अहमदनगर जेल में लिखी थी।
- **तथ्य:** उन्होंने उद्देश्य प्रस्ताव (Objective Resolution) प्रस्तुत किया था, जो भारतीय संविधान की प्रस्तावना का आधार बना।
- **नोट:** नेहरू के काल में राजस्थान की कई सिंचाई परियोजनाओं (जैसे चंबल परियोजना) की नींव रखी गई, जिन्हें वे राष्ट्र निर्माण का आधार मानते थे।

7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

वैचारिक स्तंभ	मुख्य उद्देश्य	उपलब्धि / संस्थान
लोकतंत्र	जन-भागीदारी और संस्थागत मर्यादा	प्रथम आम चुनाव (1951-52), पंचायती राज।
धर्मनिरपेक्षता	सांप्रदायिक सद्भाव और समानता	धर्मनिरपेक्ष संविधान, अल्पसंख्यकों की सुरक्षा।
वैज्ञानिक दृष्टिकोण	तर्कशीलता और आधुनिकता	IITs, CSIR, परमाणु ऊर्जा आयोग।
समाजवाद	आर्थिक न्याय और आत्मनिर्भरता	योजना आयोग, पंचवर्षीय योजनाएं।

अध्याय 17: नियोजित अर्थव्यवस्था और पंचवर्षीय योजनाएं

स्वतंत्रता के समय भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती गरीबी, बेरोजगारी और कृषि पर अत्यधिक निर्भरता थी। नेहरू का मानना था कि बाजार की शक्तियों पर निर्भर रहने के बजाय राज्य को 'आर्थिक नियोजन' (Economic Planning) के माध्यम से संसाधनों का न्यायसंगत वितरण करना चाहिए।

1. योजना आयोग (Planning Commission)

आर्थिक विकास की रूपरेखा तैयार करने के लिए **15 मार्च, 1950** को एक गैर-संवैधानिक और परामर्शदात्री संस्था के रूप में योजना आयोग का गठन किया गया।

- **अध्यक्ष:** प्रधानमंत्री (पदेन)। इसके प्रथम अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू और प्रथम उपाध्यक्ष गुलजारीलाल नंदा थे।
- **राष्ट्रीय विकास परिषद (NDC):** योजनाओं के क्रियान्वयन में राज्यों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए **6 अगस्त, 1952** को NDC का गठन किया गया। इसे 'सुपर कैबिनेट' भी कहा जाता था।

2. प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-1956)

यह योजना मुख्य रूप से **हैरोड-डोमर मॉडल (Harrod-Domar Model)** पर आधारित थी।

- **मुख्य प्राथमिकता:** कृषि और सिंचाई। इसका लक्ष्य विभाजन के कारण उत्पन्न खाद्य संकट को दूर करना था।
- **उपलब्धियां:**
 - भाखड़ा-नांगल, हीराकुंड और दामोदर घाटी जैसी बड़ी सिंचाई परियोजनाओं की नींव रखी गई।
 - **सामुदायिक विकास कार्यक्रम (1952):** ग्रामीण विकास हेतु देशव्यापी अभियान शुरू हुआ।
 - विकास दर **3.6%** रही, जो लक्ष्य (2.1%) से काफी अधिक थी।

3. द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-1961): महालनोबिस मॉडल

यह भारतीय अर्थव्यवस्था के इतिहास का सबसे क्रांतिकारी मोड़ माना जाता है। यह प्रसिद्ध सांख्यिकीविद् **प्रो. पी.सी. महालनोबिस** के मॉडल पर आधारित थी।

- **मुख्य प्राथमिकता:** तीव्र औद्योगिकीकरण और भारी उद्योग।
- **दर्शन:** 'समाजवादी समाज की स्थापना' (1955 के आवड़ी अधिवेशन का संकल्प)।
- **प्रमुख औद्योगिक विकास:**
 - तीन बड़े इस्पात संयंत्रों की स्थापना: **भिलाई** (रूस की मदद से), **राउरकेला** (जर्मनी) और **दुर्गापुर** (ब्रिटेन)।
 - सार्वजनिक क्षेत्र (Public Sector) को अर्थव्यवस्था की 'कमांडिंग हाइट्स' बनाया गया।

4. तृतीय पंचवर्षीय योजना (1961-1966)

इस योजना का लक्ष्य भारत को 'आत्मनिर्भर' और 'स्वतः स्फूर्त' (Take-off stage) अर्थव्यवस्था बनाना था।

- **मुख्य प्राथमिकता:** कृषि और उद्योग दोनों का संतुलित विकास।
- **बाधाएं और विफलता:** यह योजना अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में असफल रही। इसके प्रमुख कारण थे:
 1. **भारत-चीन युद्ध (1962)**

2. भारत-पाक युद्ध (1965)
3. भीषण अकाल (1965-66)
- परिणाम: इसके बाद 1966-69 के दौरान 'योजना अवकाश' (Plan Holiday) घोषित करना पड़ा।

5. विश्लेषण: कृषि बनाम भारी उद्योग का विवाद

अक्सर यह आलोचना की जाती है कि द्वितीय योजना में नेहरू-महालनोबिस मॉडल ने कृषि की उपेक्षा की, जिसके कारण 1960 के दशक में खाद्य संकट पैदा हुआ। हालांकि, रक्षात्मक दृष्टिकोण यह है कि भारी उद्योगों के बिना भारत कभी सामरिक और तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर नहीं बन सकता था। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से 'पंचवर्षीय योजनाओं के मॉडल' और 'विदेशी सहायता से स्थापित कारखानों' के नाम सुमेलित करने वाले प्रश्नों के लिए अनिवार्य हैं।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (विशेष)

- तथ्य: द्वितीय योजना के दौरान ही राजस्थान में चंबल घाटी परियोजना के अंतर्गत **गांधी सागर बांध** का कार्य पूर्ण हुआ।
- तथ्य: 'नियोजित विकास' का विचार नेहरू ने सोवियत संघ (USSR) की यात्रा के बाद ग्रहण किया था।
- तथ्य: **खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग (KVIC)** की स्थापना द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान (1957) की गई थी।

7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

योजना	अवधि	मॉडल	मुख्य लक्ष्य	विशेष उपलब्धि
प्रथम	1951-56	हैरोड-डोमर	कृषि विकास	भाखड़ा-नांगल बांध, सामुदायिक विकास।
द्वितीय	1956-61	महालनोबिस	भारी उद्योग	भिलाई, राउरकेला, दुर्गापुर स्टील प्लांट।
तृतीय	1961-66	चक्रवर्ती/सुखमय	आत्मनिर्भरता	बोकारो स्टील प्लांट (प्रारंभिक कार्य)।

wincompete

अध्याय 18: नेहरू की विदेश नीति: गुटनिरपेक्षता और पंचशील

स्वतंत्रता के समय विश्व दो ध्रुवों (USA और USSR) में विभाजित था। नेहरू ने भारत को किसी भी सैन्य गुट में शामिल करने के बजाय एक 'स्वतंत्र विदेश नीति' का विकल्प चुना। उनका मानना था कि नव-स्वतंत्र राष्ट्रों को विकास के लिए शांति की आवश्यकता है, न कि वैश्विक प्रतिद्वंद्विता की।

1. पंचशील के सिद्धांत (Panchsheel Agreement, 1954)

चीन के साथ संबंधों को स्थिरता देने और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए **29 अप्रैल, 1954** को भारत और चीन (नेहरू और झाउ एनलाई) के बीच 'पंचशील' समझौता हुआ। इसके पाँच मूल सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

1. एक-दूसरे की **क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता** का पारस्परिक सम्मान।
2. पारस्परिक **अनाक्रमण** (Non-aggression)।
3. एक-दूसरे के **आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना**।
4. **समानता और पारस्परिक लाभ**।
5. **शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व** (Peaceful Co-existence)।

2. बांडुंग सम्मेलन (1955) और एफ्रो-एशियाई एकता

इंडोनेशिया के बांडुंग में आयोजित यह सम्मेलन तीसरी दुनिया के देशों के उदय का ऐतिहासिक क्षण था।

- **महत्व:** यह इतिहास का पहला अवसर था जब एशिया और अफ्रीका के 29 देशों ने उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध साझा स्वर उठाया।
- **नेहरू की भूमिका:** नेहरू ने इस सम्मेलन में 'गुटनिरपेक्षता' के विचार को एक वैश्विक मंच प्रदान किया। उन्होंने तर्क दिया कि एशिया और अफ्रीका को महाशक्तियों के "मोहरे" (Pawns) नहीं बनना चाहिए।
- **परिणाम:** बांडुंग सम्मेलन ने ही 1961 में 'गुटनिरपेक्ष आंदोलन' (NAM) की औपचारिक स्थापना की नींव रखी।

3. गुटनिरपेक्ष आंदोलन (Non-Aligned Movement - NAM)

गुटनिरपेक्षता का अर्थ 'तटस्थता' (Neutrality) या 'अलगाववाद' नहीं था, बल्कि मुद्दों के आधार पर स्वतंत्र निर्णय लेने की शक्ति थी।

- **संस्थापक नेता:** जवाहरलाल नेहरू (भारत), गमाल अब्दुल नासिर (मिस्र), जोसिप ब्रोज टीटो (युगोस्लाविया), सुकर्णो (इंडोनेशिया) और कामे न्क्रूमा (घाना)।
- **बेलग्रेड शिखर सम्मेलन (1961):** यहाँ NAM का प्रथम आधिकारिक सम्मेलन हुआ।
- **उद्देश्य:** नव-स्वतंत्र देशों की संप्रभुता की रक्षा करना, शीत युद्ध के तनाव को कम करना और एक न्यायसंगत विश्व व्यवस्था का निर्माण करना।

4. शीत युद्ध के दौरान मध्यस्थ की भूमिका

नेहरू के नेतृत्व में भारत ने केवल उपदेश नहीं दिए, बल्कि वैश्विक संकटों के समाधान में सक्रिय भूमिका निभाई:

- **कोरियाई युद्ध (1950-53):** भारत ने युद्धविराम कराने और कैदियों के आदान-प्रदान (Neutral Nations Repatriation Commission) में महत्वपूर्ण मध्यस्थता की।
- **इंडो-चाइना संकट (1954):** जिनेवा सम्मेलन में भारत ने शांति स्थापना में पर्दे के पीछे से बड़ी भूमिका निभाई।

- **स्वेज नहर संकट (1956):** मिस्र पर ब्रिटेन, फ्रांस और इजरायल के आक्रमण की नेहरू ने कड़ी निंदा की, जिसने भारत की 'नैतिक छवि' को विश्व में ऊँचा किया।

5. विश्लेषण: पंचशील और 1962 का युद्ध

आलोचकों का तर्क है कि नेहरू की 'पंचशील' नीति ने चीन पर अत्यधिक विश्वास किया, जिसका खामियाजा 1962 के युद्ध में भुगतना पड़ा। हालांकि, रक्षात्मक दृष्टिकोण यह है कि उस समय भारत को विकास के लिए शांति की सख्त जरूरत थी और पंचशील एक 'आदर्शवादी प्रयास' था। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से **'पंचशील समझौते की तिथि'** और **'NAM के संस्थापक नेताओं के नाम'** अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। नेहरू की विदेश नीति 'आदर्शवाद' और 'राष्ट्रीय हित' का एक अनूठा सम्मिश्रण थी।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (विशेष)

- **तथ्य:** 'पंचशील' शब्द बौद्ध अभिलेखों से लिया गया है, जो आचरण के पाँच नियमों को दर्शाता है।
- **तथ्य:** गुटनिरपेक्ष आंदोलन का प्रथम शिखर सम्मेलन **बेलग्रेड (1961)** में हुआ था।
- **तथ्य:** नेहरू ने संयुक्त राष्ट्र (UN) को विश्व शांति का मुख्य आधार माना और भारत को इसकी शांति सेना (Peacekeeping Force) में अग्रणी बनाया।
- **नोट:** राजस्थान के प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञों ने भी नेहरू के काल में अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

घटना / समझौता	वर्ष	संबद्ध व्यक्तित्व	मुख्य संदेश
पंचशील समझौता	1954	नेहरू और झाउ एनलाई	शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।
बांडुंग सम्मेलन	1955	नेहरू, सुकर्णो	एफ्रो-एशियाई एकजुटता।
बेलग्रेड सम्मेलन	1961	नेहरू, टीटो, नासिर	गुटनिरपेक्ष आंदोलन की शुरुआत।
शांति दूत की भूमिका	1950s	जवाहरलाल नेहरू	सैन्य गुटों से दूरी, स्वतंत्र निर्णय।

अध्याय 19: सामाजिक सुधार और आधुनिक कानून निर्माण

नेहरू का मानना था कि राजनैतिक स्वतंत्रता तब तक अधूरी है जब तक कि समाज के भीतर व्याप्त रूढ़ियों और असमानताओं को दूर न किया जाए। उन्होंने भारतीय समाज को आधुनिक बनाने के लिए 'विधि-सम्मत' (Legislative) मार्ग चुना, जिससे महिलाओं और हाशिए के वर्गों को सशक्त बनाया जा सके।

1. हिंदू कोड बिल विवाद और वैधानिक क्रांति

स्वतंत्रता के बाद का सबसे बड़ा सामाजिक विमर्श 'हिंदू कोड बिल' था, जिसका उद्देश्य हिंदू व्यक्तिगत कानून (Personal Law) को संहिताबद्ध और आधुनिक बनाना था।

- **डॉ. अंबेडकर की भूमिका:** तत्कालीन कानून मंत्री डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने इस बिल का मसौदा तैयार किया। वे महिलाओं को संपत्ति में अधिकार और विवाह विच्छेद (तलाक) की अनुमति देना चाहते थे।
- **विरोध:** रूढ़िवादी तत्वों और राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद तक ने इसका विरोध किया, जिसके कारण यह बिल एक बार में पारित नहीं हो सका। इसी विरोध के चलते डॉ. अंबेडकर ने 1951 में मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया।
- **विभाजन और सफलता:** नेहरू ने चतुराई से इस बड़े बिल को चार छोटे हिस्सों में विभाजित कर 1955-56 में पारित करवाया:

अधिनियम	वर्ष	मुख्य प्रावधान
हिंदू विवाह अधिनियम	1955	बहुविवाह का अंत, अंतरजातीय विवाह को मान्यता और तलाक का प्रावधान।
हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम	1956	बेटियों को पिता की संपत्ति में बराबर का हिस्सा।
हिंदू अल्पसंख्यक एवं संरक्षकता अधिनियम	1956	बच्चों के संरक्षण संबंधी आधुनिक नियम।
हिंदू दत्तक और भरण-पोषण अधिनियम	1956	गोद लेने की प्रक्रिया का सरलीकरण और महिलाओं को अधिकार।

2. अस्पृश्यता अपराध अधिनियम, 1955

संविधान के अनुच्छेद 17 द्वारा छुआछूत को समाप्त किया गया था, लेकिन इसे जमीन पर लागू करने हेतु दंडात्मक कानून की आवश्यकता थी।

- **अधिनियम:** 1955 में 'अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम' पारित किया गया।
- **प्रावधान:** सार्वजनिक स्थलों (मंदिर, कुएं, होटल) पर प्रवेश से रोकने को दंडनीय अपराध बनाया गया।

- **नाम परिवर्तन:** 1976 में इसका नाम बदलकर 'नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम' कर दिया गया। यह कानून दलितों के सामाजिक समावेश की दिशा में नेहरू सरकार का सबसे बड़ा वैधानिक कदम था।

3. शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार

नेहरू ने शिक्षा और स्वास्थ्य को 'राष्ट्रीय विकास का आधार' माना।

- **UGC की स्थापना (1956):** उच्च शिक्षा के मानकों को नियंत्रित करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का गठन किया गया।
- **IITs और IIMs:** खड़गपुर (1951) में प्रथम IIT की स्थापना के साथ तकनीकी शिक्षा की नींव रखी गई।
- **स्वास्थ्य (AIIMS):** 1956 में दिल्ली में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS) की स्थापना की गई ताकि शोध और चिकित्सा में भारत आत्मनिर्भर बन सके।
- **रोग उन्मूलन:** मलेरिया और चेचक जैसे रोगों के विरुद्ध प्रथम राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम नेहरू काल में ही शुरू हुए।

4. विश्लेषण: 'विधि' द्वारा सामाजिक परिवर्तन

नेहरू और अंबेडकर का यह साझा विश्वास था कि कानून समाज की चेतना को बदल सकता है। हिंदू कोड बिल ने सदियों पुरानी पितृसत्तात्मक जड़ों को हिला दिया। यद्यपि उस समय 'समान नागरिक संहिता' (UCC) को लागू करना राजनैतिक रूप से कठिन माना गया, लेकिन हिंदू कानूनों में सुधार कर नेहरू ने आधुनिकता की ओर पहला बड़ा कदम बढ़ाया। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से **1955-56 के चार अधिनियमों** के नाम और **UGC/AIIMS के स्थापना वर्ष** अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (RPSC विशेष)

- **तथ्य:** डॉ. जाकिर हुसैन और मौलाना अबुल कलाम आजाद ने नेहरू के कार्यकाल में शिक्षा नीति को दिशा प्रदान की।
- **तथ्य:** 1950 में स्थापित 'केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड' (CSWB) ने ग्रामीण महिलाओं हेतु कल्याणकारी योजनाएं शुरू कीं।
- **तथ्य:** नेहरू ने महिलाओं की शिक्षा के लिए 'दुर्गाबाई देशमुख समिति' (1958) की सिफारिशों को लागू किया।
- **नोट:** राजस्थान में भी इसी काल में शिक्षा के प्रसार हेतु जिला स्तर पर राजकीय महाविद्यालयों की श्रृंखला प्रारंभ हुई।

6. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

कानून / संस्थान	वर्ष	मुख्य उद्देश्य
हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम	1956	संपत्ति में लैंगिक समानता।
अस्पृश्यता अपराध अधिनियम	1955	अनुच्छेद 17 का कानूनी क्रियान्वयन।

UGC एक्ट	1956	विश्वविद्यालय शिक्षा का समन्वय।
IIT खड़गपुर	1951	तकनीकी आत्मनिर्भरता।
AIIMS दिल्ली	1956	उच्च स्तरीय स्वास्थ्य शोध।

अध्याय 20: लोकतांत्रिक संस्थाओं का निर्माण और प्रथम चुनाव

स्वतंत्रता के बाद भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि एक स्थिर और जीवंत संसदीय लोकतंत्र की स्थापना थी। नेहरू का मानना था कि लोकतंत्र केवल चुनाव तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संस्थाओं की मर्यादा और जन-भागीदारी का एक तंत्र है।

1. भारतीय निर्वाचन आयोग की स्थापना

संविधान के अनुच्छेद 324 के तहत 25 जनवरी 1950 को एक स्वतंत्र निकाय के रूप में निर्वाचन आयोग का गठन किया गया।

- **सुकुमार सेन (Sukumar Sen):** इन्हें भारत का प्रथम मुख्य निर्वाचन आयुक्त बनाया गया। एक गणितज्ञ और सिविल सेवक के रूप में उन्होंने शून्य से विश्व की सबसे बड़ी चुनावी मशीनरी खड़ी करने का ऐतिहासिक कार्य किया।
- **स्वायत्तता:** आयोग को सरकार के प्रभाव से मुक्त रखा गया ताकि निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित हो सकें।

2. प्रथम आम चुनाव (1951-52): एक महान प्रयोग

अक्टूबर 1951 से फरवरी 1952 तक चले ये चुनाव भारतीय लोकतंत्र की आधारशिला थे।

- **चुनौतियां:** * **विशाल मतदाता सूची:** लगभग 17.6 करोड़ मतदाता, जिनमें से 85% निरक्षर थे।
 - **भौगोलिक बाधाएं:** दुर्गम क्षेत्रों में मतदान केंद्रों की स्थापना।
 - **पहचान का संकट:** कई महिला मतदाताओं ने अपने नाम के बजाय 'फलां की मां' या 'फलां की पत्नी' के रूप में पंजीकरण कराया था, जिसे आयोग ने अस्वीकार कर दोबारा सुधारने का आदेश दिया।
- **अभिनव समाधान:** निरक्षरता को देखते हुए 'चुनाव चिह्न' (Symbols) की पद्धति अपनाई गई। प्रत्येक उम्मीदवार के लिए अलग मतपेटी (Ballot Box) रखी गई जिस पर उसका चिह्न अंकित था।

3. संसदीय लोकतंत्र की मजबूती

नेहरू ने केवल चुनाव नहीं कराए, बल्कि संसदीय परंपराओं का पोषण भी किया।

- **संसद की गरिमा:** नेहरू स्वयं संसद की बहसों में नियमित भाग लेते थे और विपक्ष के तीखे सवालों का सम्मान के साथ उत्तर देते थे।
- **विपक्ष की भूमिका:** प्रथम लोकसभा में विपक्षी दल (जैसे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, सोशलिस्ट पार्टी और जनसंघ) संख्या में कम थे, लेकिन नेहरू ने उन्हें पर्याप्त महत्व दिया। उन्होंने **श्यामा प्रसाद मुखर्जी** और **बी.आर. अंबेडकर** जैसे गैर-कांग्रेसी नेताओं को अपने प्रथम मंत्रिमंडल में स्थान देकर समावेशी राजनीति की नींव रखी।

- **स्वतंत्र संस्थाएं:** सीएजी (CAG), सुप्रीम कोर्ट और यूपीएससी (UPSC) जैसी संस्थाओं को संवैधानिक स्वायत्तता देकर उन्हें कार्यपालिका के दबाव से मुक्त रखा।

4. विश्लेषणात्मक विवरण (Analysis Box)

अकादमिक विश्लेषण: सफल लोकतंत्र का भारतीय मॉडल

1952 के चुनावों को विदेशी मीडिया ने 'छलांग' (Leap in the Dark) कहा था, लेकिन इसकी सफलता ने यह सिद्ध किया कि लोकतंत्र के लिए साक्षरता से अधिक '**राजनैतिक चेतना**' आवश्यक है। भारत का संसदीय मॉडल 'वेस्टमिंस्टर मॉडल' पर आधारित था, लेकिन नेहरू ने इसमें 'भारतीय सामाजिक वास्तविकता' को पिरोया। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से **सुकुमार सेन का नाम** और **निर्वाचन आयोग की स्थापना तिथि** (जिसे अब 'राष्ट्रीय मतदाता दिवस' के रूप में मनाया जाता है) अत्यंत महत्वपूर्ण है।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (विशेष)

- **तथ्य:** राजस्थान विधानसभा के प्रथम चुनाव भी **1952** में हुए, जिसमें कुल **160 सीटें** थीं।
- **तथ्य:** प्रथम लोकसभा चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 489 में से **364 सीटें** जीतकर प्रचंड बहुमत प्राप्त किया।
- **तथ्य:** **25 जनवरी** को निर्वाचन आयोग की स्थापना के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष '**राष्ट्रीय मतदाता दिवस**' मनाया जाता है।
- **नोट:** प्रथम आम चुनाव में राजस्थान से **महाराजा करणी सिंह** (बीकानेर) और **महारानी गायत्री देवी** (बाद में) जैसे रियासती व्यक्तित्वों ने भी लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लिया।

6. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Scan)

विषय	आधिकारिक विवरण	ऐतिहासिक महत्व
प्रथम मुख्य चुनाव आयुक्त	सुकुमार सेन	निष्पक्ष चुनाव की नींव।
अनुच्छेद 324	निर्वाचन आयोग की शक्तियां	स्वतंत्र संवैधानिक दर्जा।
प्रथम आम चुनाव अवधि	अक्टूबर 1951 - फरवरी 1952	विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक अभ्यास।
प्रथम लोकसभा अध्यक्ष	जी.वी. मावलंकर	संसदीय मर्यादाओं की स्थापना।

wincompete

राष्ट्र निर्माण: विज्ञान और तकनीक का विकास (1964 तक)

अध्याय 21: वैज्ञानिक नीति संकल्प (SPR 1958) और आधारभूत ढांचा

नेहरू का मानना था कि "विज्ञान के बिना भविष्य का निर्माण असंभव है।" स्वतंत्रता के बाद, भारत को औद्योगिक रूप से विकसित करने और जनता के जीवन स्तर को सुधारने के लिए एक सुनियोजित वैज्ञानिक नीति की आवश्यकता थी।

1. वैज्ञानिक नीति संकल्प, 1958 (Scientific Policy Resolution)

4 मार्च, 1958 को भारत सरकार ने संसद में 'वैज्ञानिक नीति संकल्प' (SPR) प्रस्तुत किया। यह विश्व के उन चुनिंदा दस्तावेजों में से एक था जहाँ किसी देश ने विज्ञान को अपनी राष्ट्रीय नीति का अभिन्न अंग बनाया।

- **मुख्य दर्शन:** इसका उद्देश्य भारतीयों के बीच 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' (Scientific Temper) विकसित करना और शुद्ध व व्यावहारिक विज्ञान के बीच संतुलन बनाना था।
- **प्रमुख लक्ष्य:**
 1. देश में वैज्ञानिक प्रतिभा को खोजना और उन्हें प्रोत्साहित करना।
 2. वैज्ञानिक शिक्षा और शोध के लिए उच्च स्तरीय संस्थानों की स्थापना।
 3. विज्ञान के लाभों को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाना।
 4. आधुनिक तकनीक के माध्यम से संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करना।

2. CSIR की भूमिका: प्रयोगशालाओं का जाल

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) की स्थापना यद्यपि 1942 में हुई थी, लेकिन नेहरू युग में इसे वह आधार मिला जिसने भारत को 'प्रयोगशालाओं का देश' बना दिया।

- **डॉ. शांति स्वरूप भटनागर (Dr. S.S. Bhatnagar):** इन्हें 'भारत में शोध प्रयोगशालाओं का जनक' कहा जाता है। उन्होंने नेहरू के सहयोग से देश के विभिन्न कोनों में विशिष्ट राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की स्थापना की।
- **नेटवर्क का विस्तार:**
 - * **राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (NPL), दिल्ली:** मानक और मापन हेतु।
 - **राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (NCL), पुणे:** रसायन विज्ञान में आत्मनिर्भरता हेतु।
 - **केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिकीय अनुसंधान संस्थान (CFTRI), मैसूर:** खाद्य सुरक्षा और प्रसंस्करण हेतु।
- **महत्व:** इन प्रयोगशालाओं ने आयात प्रतिस्थापन (Import Substitution) में बड़ी भूमिका निभाई, जिससे विदेशी मुद्रा की बचत हुई।

3. वैज्ञानिक आधारभूत ढांचे का सुदृढीकरण

नेहरू काल में विज्ञान को केवल सरकारी विभागों तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि इसे शिक्षा और उद्योग से जोड़ा गया।

- **राष्ट्रीय अनुसंधान विकास निगम (NRDC):** 1953 में स्थापित, जिसका कार्य प्रयोगशालाओं में विकसित तकनीक को उद्योगों तक पहुँचाना था।
- **परामर्शदात्री समितियाँ:** वैज्ञानिकों को सीधे सरकार के निर्णयों में शामिल किया गया। नेहरू ने स्वयं विज्ञान और तकनीक विभाग का प्रभार अपने पास रखा था।

4. विश्लेषण: SPR 1958 का दूरगामी प्रभाव

SPR 1958 केवल एक प्रस्ताव नहीं था, बल्कि यह भारत के 'आत्मविश्वास' का दस्तावेज था। इसने यह सुनिश्चित किया कि वैज्ञानिक शोध को राजनीति से ऊपर रखा जाए। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से 'SPR की तिथि (4 मार्च 1958)' और डॉ. शांति स्वरूप भटनागर के योगदान को समझना अनिवार्य है। CSIR ने ही भारत में

'स्वदेशी तकनीक' के विकास का मार्ग प्रशस्त किया, जो आगे चलकर हरित क्रांति और औद्योगिक विकास का आधार बना।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (विशेष)

- **तथ्य:** राजस्थान में **केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (CEERI)** की स्थापना 1953 में **पिलानी** में की गई थी, जो CSIR की एक महत्वपूर्ण इकाई है।
- **तथ्य:** डॉ. शांति स्वरूप भटनागर की याद में 1958 से विज्ञान के क्षेत्र में प्रतिष्ठित '**शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार**' दिया जाता है।
- **तथ्य:** नेहरू ने कहा था कि "विज्ञान का उद्देश्य केवल भौतिक प्रगति नहीं, बल्कि मनुष्य की बुद्धि को अंधविश्वास से मुक्त करना है।"

6. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

संस्थान / घटना	वर्ष	मुख्य व्यक्तित्व	मुख्य उद्देश्य
CSIR (विस्तार)	1947-1964	डॉ. एस.एस. भटनागर	राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की स्थापना।
SPR 1958	4 मार्च 1958	जवाहरलाल नेहरू	वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नीति निर्माण।
NRDC	1953	-	प्रयोगशाला और उद्योग के बीच सेतु।
NPL (दिल्ली)	1947/50	-	भौतिकी अनुसंधान और मानक निर्धारण।

अध्याय 22: परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम: डॉ. होमी जे. भाभा का योगदान

भारत में परमाणु ऊर्जा की नींव स्वतंत्रता से पूर्व ही रख दी गई थी। डॉ. होमी जहांगीर भाभा ने दूरदर्शिता के साथ यह पहचान लिया था कि भारत की भविष्य की ऊर्जा सुरक्षा और तकनीकी संप्रभुता के लिए परमाणु शक्ति अनिवार्य है।

1. टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (TIFR) की स्थापना

परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के लिए आवश्यक मानव संसाधन और बुनियादी शोध तैयार करने के लिए 1945 में मुंबई में TIFR की स्थापना की गई।

- **पालना (Nursery):** इसे भारतीय परमाणु कार्यक्रम का 'पालना' कहा जाता है। डॉ. भाभा ने सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट की मदद से इसे शुरू किया।
- **महत्व:** यहाँ प्रशिक्षित वैज्ञानिकों ने ही आगे चलकर परमाणु ऊर्जा आयोग और ट्रॉम्बे (अब BARC) के अनुसंधान केंद्रों का नेतृत्व किया।

2. परमाणु ऊर्जा आयोग (AEC) एवं विभाग (DAE) का गठन

भारत सरकार ने परमाणु शक्ति के महत्व को समझते हुए इसे सीधे प्रधानमंत्री के नियंत्रण में रखा।

- **परमाणु ऊर्जा अधिनियम (1948):** स्वतंत्रता के तत्काल बाद अगस्त 1948 में परमाणु ऊर्जा आयोग (Atomic Energy Commission) का गठन किया गया, जिसके प्रथम अध्यक्ष डॉ. होमी जे. भाभा बने।
- **परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE):** 1954 में परमाणु ऊर्जा विभाग की स्थापना की गई, जो सीधे प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) के प्रति जवाबदेह था।
- **ट्रॉम्बे अनुसंधान केंद्र (1954):** परमाणु ऊर्जा के व्यावहारिक उपयोग के लिए बॉम्बे के पास ट्रॉम्बे में शोध केंद्र स्थापित किया गया, जिसका 1967 में नाम बदलकर **भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC)** कर दिया गया।

3. डॉ. होमी जे. भाभा: आधुनिक भारत के 'न्यूटन'

डॉ. भाभा न केवल एक महान भौतिकविद् थे, बल्कि एक कुशल प्रबंधक भी थे।

- **अंतरराष्ट्रीय छवि:** उन्होंने 1955 में जिनेवा में आयोजित 'परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग' पर प्रथम अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की अध्यक्षता की।
- **दृष्टिकोण:** उन्होंने नारा दिया— **"परमाणु शक्ति: शांति के लिए"**। उनका मानना था कि भारत को कोयले पर निर्भरता कम कर यूरेनियम और थोरियम का उपयोग करना चाहिए।

4. भारत की त्रि-स्तरीय परमाणु रणनीति (Three-Stage Nuclear Program)

भारत के पास यूरेनियम कम है लेकिन **थोरियम** का दुनिया का सबसे बड़ा भंडार (लगभग 25%) है। इसी वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए डॉ. भाभा ने त्रि-स्तरीय रणनीति तैयार की:

1. **प्रथम चरण (PHWR):** प्राकृतिक यूरेनियम को ईंधन के रूप में उपयोग कर 'प्रेसराइज्ड हैवी वॉटर रिएक्टर्स' (PHWR) का संचालन, जिससे सह-उत्पाद के रूप में **प्लूटोनियम** प्राप्त हो।
2. **द्वितीय चरण (FBR):** प्लूटोनियम को ईंधन के रूप में उपयोग कर 'फास्ट ब्रीडर रिएक्टर्स' (FBR) चलाना। ये रिएक्टर जितना ईंधन जलाते हैं, उससे अधिक ईंधन (प्लूटोनियम) पैदा करते हैं।
3. **तृतीय चरण (Thorium-based):** दूसरे चरण के प्लूटोनियम का उपयोग कर भारत के विशाल थोरियम भंडार को **यूरेनियम-233** में बदलना और बिजली पैदा करना। यह अंतिम लक्ष्य भारत को ऊर्जा क्षेत्र में पूर्णतः आत्मनिर्भर बनाएगा।

5. विश्लेषण: 'शांतिपूर्ण' बनाम 'सामरिक' परमाणु ऊर्जा

नेहरू और भाभा की जोड़ी ने स्पष्ट किया था कि भारत परमाणु बम बनाने की होड़ में नहीं है, बल्कि परमाणु तकनीक का उपयोग बिजली, कृषि और चिकित्सा (कैंसर उपचार) के लिए करना चाहता है। हालाँकि, इसी दौर में स्थापित बुनियादी ढांचे ने ही 1974 (पोखरण-I) में भारत को परमाणु परीक्षण करने की सामरिक क्षमता प्रदान की। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से **त्रि-स्तरीय कार्यक्रम के चरणों** और **TIFR के स्थापना वर्ष** को विशेष रूप से याद रखना चाहिए।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (विशेष)

- **तथ्य:** भारत का पहला परमाणु रिएक्टर '**अप्सरा**' (1956) था, जो एशिया का भी पहला परमाणु रिएक्टर था। इसे ब्रिटेन के सहयोग से बनाया गया था।
- **तथ्य:** राजस्थान का **रावतभाटा परमाणु बिजली घर** (चित्तौड़गढ़) कनाडा के सहयोग से स्थापित किया गया था (इसकी नींव नेहरू काल में रखी गई थी)।
- **तथ्य:** डॉ. भाभा को '**भारतीय परमाणु कार्यक्रम का जनक**' कहा जाता है।

7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

मील का पत्थर	वर्ष	विवरण / महत्व
TIFR	1945	मूलभूत अनुसंधान केंद्र।
AEC का गठन	1948	आधिकारिक नियामक निकाय।
अप्सरा रिएक्टर	1956	एशिया का प्रथम परमाणु रिएक्टर।
DAE का गठन	1954	समर्पित सरकारी विभाग।
BARC (ट्रॉम्बे)	1954/67	मुख्य अनुसंधान संस्थान।

अध्याय 23: अंतरिक्ष अनुसंधान की नींव: डॉ. विक्रम साराभाई

भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम केवल वैज्ञानिक जिज्ञासा का परिणाम नहीं था, बल्कि यह सामाजिक-आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण औजार था। डॉ. विक्रम साराभाई ने यह स्पष्ट किया था कि भारत को चंद्रमा या ग्रहों की होड़ में विकसित देशों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं करनी है, बल्कि अंतरिक्ष तकनीक का उपयोग संचार, शिक्षा और कृषि के लिए करना है।

1. 'इनकोस्पार' (INCOSPAR) का गठन (1962)

परमाणु ऊर्जा के बाद अंतरिक्ष विज्ञान को गति देने हेतु 1962 में भारत सरकार ने 'भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति' (INCOSPAR) की स्थापना की।

- **नेतृत्व:** डॉ. विक्रम साराभाई को इसका अध्यक्ष बनाया गया। यह समिति **परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE)** के अंतर्गत कार्य करती थी।
- **नेहरू का विजन:** पंडित नेहरू ने डॉ. साराभाई के इस प्रस्ताव को तुरंत मंजूरी दी कि भारत को एक स्वतंत्र अंतरिक्ष कार्यक्रम की आवश्यकता है।
- **भूमिका:** INCOSPAR का मुख्य कार्य भारत में अंतरिक्ष शोध के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा तैयार करना और अंतरराष्ट्रीय सहयोग स्थापित करना था।

2. थुम्बा रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन (TERLS)

अंतरिक्ष कार्यक्रम की पहली बड़ी भौतिक उपलब्धि केरल के तिरुवनंतपुरम के पास **थुम्बा** में एक रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन की स्थापना थी।

- **स्थान का चयन:** थुम्बा को इसलिए चुना गया क्योंकि यह **पृथ्वी के चुंबकीय भूमध्य रेखा (Magnetic Equator)** के ठीक ऊपर स्थित है, जो ऊपरी वायुमंडल के शोध के लिए आदर्श है।
- **ऐतिहासिक प्रक्षेपण (21 नवंबर, 1963):** भारत ने अपना पहला रॉकेट 'नाइकी-अपाचे' (Nike-Apache) अमेरिका के सहयोग से थुम्बा से लॉन्च किया।
- **संघर्ष की गाथा:** शुरुआती दौर में संसाधनों की इतनी कमी थी कि रॉकेट के हिस्सों को **साइकिल और बैलगाड़ियों** पर ढोकर लॉन्च पैड तक पहुँचाया गया था।

3. डॉ. विक्रम साराभाई: भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक

डॉ. साराभाई एक स्वप्नद्रष्टा वैज्ञानिक थे जिन्होंने विज्ञान को मानव कल्याण से जोड़ा।

- **दृष्टिकोण:** उनका मानना था कि उपग्रहों का उपयोग टीवी के माध्यम से दूरदराज के गाँवों में किसानों को शिक्षित करने के लिए किया जाना चाहिए।
- **संस्थानों का निर्माण:** उन्होंने न केवल अंतरिक्ष शोध बल्कि **IIM अहमदाबाद** और भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (PRL) जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों की स्थापना में भी भूमिका निभाई।
- **स्वदेशी तकनीक:** वे भारत को लॉन्च व्हीकल (प्रक्षेपण यान) तकनीक में आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे, जिसके बीज इसी कालखंड में बोए गए।

4. विश्लेषण: 'गरीब राष्ट्र' और 'महंगा अंतरिक्ष विज्ञान'

अक्सर यह सवाल उठाया जाता था कि जिस देश में लोग भूखे मर रहे हों, वहाँ अंतरिक्ष पर पैसा खर्च करना कहाँ तक जायज है? डॉ. साराभाई का उत्तर 'रक्षात्मक' और स्पष्ट था— "यदि हम आज तकनीक नहीं अपनाएंगे, तो हम हमेशा के लिए पिछड़ जाएंगे।" उन्होंने सिद्ध किया कि अंतरिक्ष तकनीक से मौसम की सटीक भविष्यवाणी कर करोड़ों रुपयों की फसल बचाई जा सकती है। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से **'इनकोस्पार' के गठन का वर्ष और प्रथम रॉकेट लॉन्च की तिथि** सबसे महत्वपूर्ण तथ्य हैं।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (विशेष)

- **तथ्य:** भारत का पहला स्वदेशी रॉकेट '**रोहिणी-75**' था, जिसकी नींव इसी प्रारंभिक दौर में रखी गई थी।

- **तथ्य:** 1969 में INCOSPAR का पुनर्गठन करके **भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO)** बनाया गया।
- **तथ्य:** डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम डॉ. साराभाई की इसी प्रारंभिक टीम के महत्वपूर्ण सदस्य थे।
- **नोट:** राजस्थान के पश्चिमी भाग (पोखरण/जैसलमेर) का उपयोग बाद में सामरिक परीक्षणों के लिए हुआ, लेकिन अंतरिक्ष शोध की वैज्ञानिक चेतना राजस्थान के तकनीकी संस्थानों में नेहरू काल से ही विकसित होने लगी थी।

6. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

ऐतिहासिक घटना	तिथि / वर्ष	स्थान / व्यक्तित्व	महत्व
INCOSPAR का गठन	1962	डॉ. विक्रम साराभाई	अंतरिक्ष कार्यक्रम का वैधानिक प्रारंभ।
प्रथम रॉकेट प्रक्षेपण	21 नवंबर 1963	थुम्बा (TERLS)	भारत की अंतरिक्ष यात्रा की शुरुआत।
नाइकी-अपाचे	1963	(अमेरिका के सहयोग से)	प्रथम साउंडिंग रॉकेट।
PRL की स्थापना	1947	अहमदाबाद	अंतरिक्ष शोध का आधार स्तंभ।

अध्याय 24: औद्योगिक एवं कृषि अनुसंधान संस्थान

स्वतंत्रता के समय भारत में उच्च तकनीकी और प्रबंधकीय शिक्षा का अभाव था। राष्ट्र निर्माण के लिए यह आवश्यक था कि वैश्विक स्तर के ऐसे संस्थान बनाए जाएं जो भारत की विशिष्ट समस्याओं का समाधान स्वदेशी प्रतिभा के माध्यम से कर सकें।

1. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IITs): तकनीकी क्रांति की नींव

1945 में गठित **नलिनी रंजन सरकार समिति** की सिफारिशों के आधार पर भारत में उच्च तकनीकी शिक्षा के लिए IITs की योजना बनाई गई।

- **प्रथम IIT (खड़गपुर, 1951):** पश्चिम बंगाल के खड़गपुर में स्थित एक पूर्व जेल (हिजली डिटेंशन कैम्प) के परिसर में भारत का पहला IIT स्थापित किया गया। नेहरू ने इसे "भारत के भविष्य का प्रतीक" कहा।
- **वैश्विक सहयोग:** नेहरू की विदेश नीति का लाभ इन संस्थानों को मिला। अन्य IITs विभिन्न देशों के सहयोग से बने:
 - **IIT बॉम्बे (1958):** सोवियत संघ (USSR) के सहयोग से।
 - **IIT मद्रास (1959):** पश्चिम जर्मनी के सहयोग से।
 - **IIT कानपुर (1959):** अमेरिका (USA) के सहयोग से।
 - **IIT दिल्ली (1961):** ब्रिटेन (UK) के सहयोग से।

2. भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIMs): पेशेवर नेतृत्व

औद्योगिक विकास के साथ-साथ कुशल प्रबंधन की आवश्यकता को देखते हुए 1961 में IIMs की स्थापना की गई।

- **उद्देश्य:** सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के उद्योगों को वैश्विक मानकों के अनुसार प्रबंधित करना।
- **स्थापना (1961):** प्रथम दो संस्थान **कोलकाता** (MIT के सहयोग से) और **अहमदाबाद** (हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के सहयोग से) में स्थापित किए गए।

3. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS): स्वास्थ्य अनुसंधान

चिकित्सा शिक्षा और उच्च स्तरीय स्वास्थ्य सेवाओं में आत्मनिर्भरता के लिए 1956 में संसद के एक अधिनियम द्वारा दिल्ली में AIIMS की स्थापना की गई।

- **विशेषता:** इसे एक 'स्वायत्त' संस्थान का दर्जा दिया गया ताकि यह चिकित्सा क्षेत्र में शोध के नए मानक स्थापित कर सके।
- **राजकुमारी अमृत कौर:** तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री अमृत कौर ने इसके निर्माण के लिए न्यूजीलैंड और अन्य अंतरराष्ट्रीय दाताओं से आर्थिक सहायता जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) और विस्तार

भारत की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था को 'विज्ञान आधारित खेती' की ओर मोड़ने के लिए ICAR का पुनर्गठन किया गया।

- **भूमिका:** ICAR ने देश भर में कृषि विश्वविद्यालयों और अनुसंधान केंद्रों का जाल बिछाया।
- **Pusa Institute (IARI):** दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने उन्नत बीजों पर शोध प्रारंभ किया, जिसने 1960 के दशक के उत्तरार्ध में आने वाली '**हरित क्रांति**' का वैज्ञानिक आधार तैयार किया।

5. विश्लेषण: 'ब्रेन ड्रेन' बनाम 'राष्ट्र निर्माण'

इन संस्थानों की स्थापना नेहरू युग की सबसे बड़ी दूरदर्शिता थी। यद्यपि बाद के वर्षों में इन संस्थानों के स्नातकों के विदेश जाने (ब्रेन ड्रेन) की आलोचना हुई, लेकिन इन्होंने भारत की एक 'बौद्धिक महाशक्ति' (Intellectual Superpower) के रूप में छवि बनाई। परीक्षाओं की दृष्टि से **IIT खड़गपुर का स्थापना वर्ष और विदेशी**

सहयोग वाले देशों के नाम सुमेलित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये संस्थान केवल शिक्षा के केंद्र नहीं, बल्कि भारत की 'सॉफ्ट पावर' के आधार स्तंभ बने।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (विशेष)

- तथ्य: राजस्थान में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए 1963 में **मालवीय क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेज (MREC)**, जयपुर की स्थापना की गई (जो अब MNIT है)।
- तथ्य: **बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस (BITS)**, पिलानी को 1964 में 'डीम्ड यूनिवर्सिटी' का दर्जा मिला, जो राजस्थान में निजी क्षेत्र की तकनीकी शिक्षा का गौरव बना।
- तथ्य: प्रथम IIT के उद्घाटन के समय नेहरू ने कहा था— "यह संस्थान केवल इंजीनियर नहीं, बल्कि नए भारत के निर्माता पैदा करेगा।"

7. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Scan)

संस्थान	स्थापना वर्ष	मुख्य केंद्र (प्रथम)	विशेष तथ्य
IIT	1951	खड़गपुर	नलिनी रंजन सरकार समिति की सिफारिश।
IIM	1961	कोलकाता / अहमदाबाद	पेशेवर प्रबंधन का विकास।
AIIMS	1956	दिल्ली	चिकित्सा शोध में स्वायत्तता।
ICAR	1929 (पुनर्गठित 1965)	दिल्ली	हरित क्रांति का वैज्ञानिक आधार।

wincompete

अध्याय 25: जलविद्युत परियोजनाएं: "आधुनिक भारत के मंदिर"

स्वतंत्रता के समय भारत की कृषि वर्षा पर निर्भर थी और बिजली का उत्पादन नगण्य था। नेहरू का विजन था कि 'बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं' (Multipurpose River Valley Projects) के माध्यम से सिंचाई, बिजली और बाढ़ नियंत्रण का एक साझा समाधान निकाला जाए।

"ये विशाल बांध, बिजली घर और कारखाने आधुनिक भारत के नए मंदिर हैं, जहाँ हमें श्रद्धा के साथ राष्ट्र निर्माण के लिए कार्य करना चाहिए।" — **जवाहरलाल नेहरू**

1. भाखड़ा-नांगल परियोजना: उत्तर भारत की जीवन रेखा

यह परियोजना **सतलुज नदी** पर स्थित है और भारत की सबसे बड़ी बहुउद्देशीय परियोजना है।

- **तकनीकी विवरण:** भाखड़ा बांध विश्व का सबसे ऊँचा **'गुरुत्वीय बांध' (Gravity Dam)** है। इसकी ऊँचाई 226 मीटर है। इसके पीछे बनी विशाल झील का नाम **'गोविंद सागर'** है।
- **आर्थिक प्रभाव:** इससे पंजाब, हरियाणा और राजस्थान को सिंचाई एवं बिजली की आपूर्ति होती है। इसने उत्तर भारत में 'हरित क्रांति' का आधार तैयार किया।

2. हीराकुंड परियोजना: बाढ़ से समृद्धि तक

ओडिशा की **महानदी** पर निर्मित यह बांध भारत की अभियांत्रिकी का उत्कृष्ट उदाहरण है।

- **तकनीकी विवरण:** यह **विश्व का सबसे लंबा मिट्टी का बांध** (Main Dam: 4.8 किमी, कुल: 25.8 किमी) है।
- **आर्थिक प्रभाव:** इसने ओडिशा के 'डेल्टा' क्षेत्र को विनाशकारी बाढ़ से बचाया और महानदी घाटी को एक औद्योगिक बेल्ट में परिवर्तित कर दिया।

3. चंबल परियोजना: राजस्थान का गौरव

राजस्थान और मध्य प्रदेश की यह संयुक्त परियोजना (साझेदारी 50:50) राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग के लिए वरदान सिद्ध हुई है।

इस परियोजना का विकास तीन चरणों में हुआ है:

चरण	बांध का नाम	स्थान	विशेष तकनीकी तथ्य
प्रथम	गांधी सागर	मंदसौर (M.P.)	चंबल का प्रथम और सबसे बड़ा बांध।
द्वितीय	राणा प्रताप सागर	रावतभाटा (राज.)	राजस्थान का सर्वाधिक जल भराव वाला बांध।
तृतीय	जवाहर सागर	कोटा (राज.)	यह एक 'पिक-अप बांध' है, जहाँ बिजली उत्पादन होता है।
सहायक	कोटा बैराज	कोटा (राज.)	इसका उपयोग केवल सिंचाई के लिए किया जाता है।

4. तकनीकी और आर्थिक विश्लेषण (Technical-Economic Analysis)

- **ऊर्जा समीकरण:** जलविद्युत का उत्पादन गुरुत्वीय स्थितिज ऊर्जा को यांत्रिक और फिर विद्युत ऊर्जा में बदलने पर आधारित है:
- $P = \eta \cdot \rho \cdot g \cdot Q \cdot H$
- (जहाँ P शक्ति है, H जल की ऊँचाई (Head) है और η दक्षता है।)
- **आर्थिक लाभ:** * **कृषि:** राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, बूंदी, बारां) में नहरी सिंचाई ने फसलों की तीव्रता को 200% तक बढ़ा दिया है।
 - **औद्योगिकीकरण:** इन परियोजनाओं से मिलने वाली सस्ती बिजली ने कोटा को राजस्थान का 'इंडस्ट्रियल हब' बना दिया।
 - **मत्स्य पालन:** बांधों के जलाशयों ने नील क्रांति (Blue Revolution) को ग्रामीण क्षेत्रों में प्रोत्साहित किया।

5. विश्लेषण: 'विस्थापन' बनाम 'विकास'

यद्यपि इन मंदिरों ने भारत को खाद्य सुरक्षा दी, लेकिन इनके निर्माण से बड़े पैमाने पर स्थानीय समुदायों का विस्थापन भी हुआ। आधुनिक इतिहासकार अब 'बड़े बांधों' के स्थान पर 'लघु जलविद्युत परियोजनाओं' पर बल देते हैं। RPSC परीक्षाओं की दृष्टि से **राणा प्रताप सागर** (कनाडा के सहयोग से स्थापित परमाणु केंद्र के पास) और **चंबल परियोजना की हिस्सेदारी (50:50)** जैसे तथ्य बार-बार पूछे जाते हैं।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (RPSC विशेष)

- **तथ्य:** **राणा प्रताप सागर बांध** राजस्थान का सबसे बड़ा बांध है (भराव क्षमता की दृष्टि से)।
- **तथ्य:** भाखड़ा-नांगल परियोजना में राजस्थान का हिस्सा **15.2%** है।
- **तथ्य:** **कोटा बैराज** राजस्थान का वह बांध है जिसका कैचमेंट एरिया (जलग्रहण क्षेत्र) सबसे बड़ा है।
- **नोट:** राजस्थान की **इंदिरा गांधी नहर (IGNP)** को भी नेहरू ने राष्ट्र निर्माण की एक महत्वपूर्ण कड़ी माना था।

7. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Scan)

परियोजना	नदी	मुख्य लाभार्थी राज्य	तकनीकी विशेषता
भाखड़ा-नांगल	सतलुज	पंजाब, हरियाणा, राजस्थान	सबसे ऊँचा गुरुत्वीय बांध।
हीराकुंड	महानदी	ओडिशा	विश्व का सबसे लंबा बांध।
चंबल	चंबल	राजस्थान, मध्य प्रदेश	बहु-चरणीय बांध श्रृंखला।
दामोदर घाटी	दामोदर	बंगाल, झारखंड	भारत की प्रथम बहुउद्देशीय परियोजना।

संदर्भ सूची:

1. *India's Struggle for Independence* - Bipan Chandra.
2. आधुनिक भारत का इतिहास - डॉ. सुमित सरकार।
3. *The Indian Struggle* - Subhash Chandra Bose.
4. *Soldier's Contribution to Indian Independence* - General Mohan Singh.
5. *An Autobiography: The Story of My Experiments with Truth* - M.K. Gandhi.
6. *Trusteeship* - Navajivan Publishing House.
7. *India After Gandhi* - Ramachandra Guha.
8. *Women in India's Freedom Struggle* - Bharti Thakur.
9. *Freedom at Midnight* - Larry Collins and Dominique Lapierre.
10. *Integration of the Indian States* - V.P. Menon.
11. *Patel: A Life* - Rajmohan Gandhi.
12. *States Reorganisation Commission Report 1955 (Official Records)*.
13. *Discovery of India* - Jawaharlal Nehru.
14. *Nehru: The Making of India* - M.J. Akbar.
15. *The Indian Economy: Problems and Prospects* - Bimal Jalan.
16. *Planning Commission Official Documents (1950-1964)*.
17. *India's Foreign Policy: Selected Speeches* - Jawaharlal Nehru.
18. *The Non-Aligned Movement: Genesis, Organization and Politics* - A.W. Singham.
19. आधुनिक राजस्थान का इतिहास - डॉ. एम.एस. जैन।
20. आधुनिक राजस्थान का इतिहास एवं भूगोल - राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
21. *History of Freedom Movement in Rajasthan* - B.L. Pangariya.
22. *The Hindu Code Bill: A Documentation* - Dr. B.R. Ambedkar Writing and Speeches.
23. *Social Policy in Independent India* - S. Guhan.
24. *The First General Election of India (1951-52)* - Election Commission Report.
25. *Science and the Raj* - Deepak Kumar.
26. *Official Documents of DST (Department of Science and Technology)*.
27. *Bhabha and his Magnificent Obsessions* - G. Venkataraman.
28. *Atoms for Peace: The Indian Experience* - Official DAE Documents.
29. *A Brief History of ISRO* - P.V. Manoranjan Rao.
30. *RPSC RAS/PSI PYQ Compendium (Gandhian Era)*.
31. *Vikram Sarabhai: A Life* - Amrita Shah.
32. *The IITians* - Sandipan Deb.
33. *Health and Medicine in Post-Independent India* - Official Ministry Records.
34. *Major River Valley Projects of India* - Central Water Commission.
35. *RPSC/UPSC PYQ Compendium (Revolutionary Movement)*.
36. *RPSC/UPSC PYQ Compendium (Post-Independence Consolidation)*.
37. *RPSC/UPSC PYQ Compendium (Subhash Bose and INA)*.
38. *RPSC/UPSC PYQ Compendium (Women Empowerment Section)*.
39. *RPSC RAS/PSI PYQ Compendium (Rajasthan Personalities)*.
40. *RPSC/UPSC PYQ Compendium (Post-Independence Integration)*.
41. *RPSC RAS/PSI PYQ Compendium (Administrative Integration Section)*.
42. *RPSC RAS/PSI PYQ Compendium (Nehruvian Era)*.
43. *RPSC RAS/PSI PYQ Compendium (Economic Planning Section)*.
44. *RPSC RAS/PSI PYQ Compendium (International Relations)*.